सूची

जीवनी	.	५—२०
चयन	.	२१—१०४

१. अल्हड़ कामनी	..	२३
२ दोपट्टे को समले, बदन को चुराये	...	२५
३. तआकुब	...	२८
४ वादा-फरामोशी	..	३१
५ बिलखती यादें	..	३२
६ लाइलाज तासीर	.	३३
७ नूरी जन्नत	..	३४
८ बरसी हुई आँखें	...	३६
९. वफादाराने-अजली का पयाम	...	३९
१० मकतले-कानपुर	...	४१
११ गद्दार से ख़िताब	...	४२
१२. जवाने-जहांबानी	...	४३
१३ शिकस्ते-ज़िंदा		४४
१४ हुब्बे-वतन और मुसलमान	..	४५
१५ इस्तकलाले-सौदा	.	४६
१६ मातमे-आज़ादी	..	५२

काम है मेरा बग़ावत, नाम है मेरा शबाब;
मेरा नारा 'इंक़िलाब-ो-इंक़िलाब-ो-इंक़िलाब !

प्रकाशन विभाग, ओल्ड सेक्रेटेरियट, पुरानी दिल्ली के एक गोल कमरे मे, जो मासिक पत्रिका 'आजकल' (उर्दू) के सम्पादक का कमरा है, दमकते चेहरे, चौड़े माथे, भारी-भरकम काया और बड़े रौबीले व्यक्तित्व के एक व्यक्ति ने पान की डिबिया से पान निकालकर मुँह मे डाला, फिर बटुए से छालिया निकालते हुए सामने कुर्सियो पर विराजमान आठ-दस भद्र पुरुषों में से एक से कहा—

"कहिये, खैरियत से तो हैं?"

"जी, नवाज़िश है," सम्बोधित सज्जन ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया। "आप फर्माइये, आपके मिज़ाज कैसे हैं?"

"मेरे मिज़ाज!" कवाम की शीशी मे से थोड़ा-सा कवाम मुँह मे डालते हुए उस रौबीले व्यक्ति ने कहा, "मेरा तो एक ही मिजाज है साहिब! पोते अलबत्ता बहुत से हैं।"

"ओह! मुआफ फर्माइयेगा।" सम्बोधित सज्जन ने बौखला कर अपनी एकवचन और बहुवचन की गलती स्वीकार करते हुए कहा।

"कैसे तशरीफ लाए?" रौबीले व्यक्ति ने फिर प्रश्न किया।

"जी, बहुत अर्सा से नियाज़ हासिल नही हुआ था, सोचा—"

उन्नीस तारीख ही कहते है।"

उस भारी-भरकम काया और रौबीले व्यक्तित्व के मालिक 'जोश' मलीहाबादी ने इस वाक्य पर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा, "लोग तो इस मुल्क के जाहिल हैं साहबज़ादे! मै आम लोगो से नही तुम लोगो से मुखातिब हूँ—तुम, जो अपने आपको अदीब और शायर कहते हो। अगर तुम लोगो ने ही ज़बान की हिफाजत करने की बजाय उसे बिगाड़ना शुरू कर दिया तो ...."

अब 'जोश' साहब बाकायदा भाषण दे रहे है। कुछ बाते वे ठीक कह रहे है और कुछ ऐसी भी कह रहे है जिन पर आक्षेप किया जा सकता है। ये बाते भाषा तथा साहित्य, धर्म तथा राजनीति, सामाजिक बंधनो तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानव-विकास तथा समाज मे स्त्री का स्थान, सामन्तशाही, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि विभिन्न विषयो को छू रही हैं और इन पर वे निरन्तर बोल रहे हैं। श्रोतागण मौन हैं। 'जोश' साहब का साहित्यिक स्थान, महत्ता और रौबीला व्यक्तित्व उनकी किसी गलत बात पर भी आक्षेप करने का साहस उत्पन्न नही होने देता कि एकाएक स्वय 'जोश' साहब अपनी पहले की कही हुई किसी बात का खण्डन करने लगते हैं। एक ओर वे साम्यवाद को मानव-मुक्ति का एकमात्र साधन मानते हैं, तो दूसरी ओर यत्र पर हल को और नागरिक जीवन पर ग्रामीण जीवन को मान्यता देते हैं। ज्ञान को स्त्री के सौन्दर्य की मृत्यु और स्त्री को पुरुष की कामतृप्ति का एक साधन सिद्ध करते है।

उन्नीस तारीख ही कहते है।"

उस भारी-भरकम काया और रौबीले व्यक्तित्व के मालिक 'जोश' मलीहावादी ने इस वाक्य पर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा, "लोग तो इस मुल्क के जाहिल हैं साहबजादे! मैं आम लोगो से नही तुम लोगों से मुखातिब हूँ—तुम, जो अपने आपको अदीब और शायर कहते हो। अगर तुम लोगो ने ही जबान की हिफाजत करने की बजाय उसे बिगाड़ना शुरू कर दिया तो……… ……"

अब 'जोश' साहब बाकायदा भाषण दे रहे है। कुछ बाते वे ठीक कह रहे हं और कुछ ऐसी भी कह रहे है जिन पर आक्षेप किया जा सकता है। ये बातें भाषा तथा साहित्य, धर्म तथा राजनीति, सामाजिक बंधनो तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानव-विकास तथा समाज में स्त्री का स्थान, सामन्तशाही, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि विभिन्न विषयो को छू रही हैं और इन पर वे निरन्तर बोल रहे हैं। श्रोतागण मौन है। 'जोश' साहब का साहित्यिक स्थान, महत्ता और रौबीला व्यक्तित्व उनकी किसी गलत बात पर भी आक्षेप करने का साहस उत्पन्न नही होने देता कि एकाएक स्वयं 'जोश' साहब अपनी पहले की कही हुई किसी बात का खण्डन करने लगते हैं। एक ओर वे साम्यवाद को मानव-मुक्ति का एकमात्र साधन मानते हैं, तो दूसरी ओर यन्त्र पर हल को और नागरिक जीवन पर ग्रामीण जीवन को मान्यता देते हैं। ज्ञान को स्त्री के सौन्दर्य की मृत्यु और स्त्री को पुरुष की कामतृप्ति का एक साधन सिद्ध करते हैं।

'जोश' साहव के विचारो का यह परस्पर विरोध उनकी पूरी शायरी मे भी मौजूद है और इसकी गवाही देते है 'अर्शो-फर्श' (धरती-आकाश), 'शोला-ओ-शवनम' (आग और ओस), 'सुवलो-सलासिल' (सुगंधित घास और जजीरे) इत्यादि उनके कविता-सग्रहो के नाम । और उनकी निम्नलिखित रुबाई से तो उनकी पूरी शायरी के नैन-नक्श सामने आ जाते हैं .

> झुकता हूँ कभी रेगे-रवा[1] की जानिव,
> उडता हूँ कभी कहकशा[2] की जानिव,
> मुझ मे दो दिल हैं, इक मायल-व-ज़मीं[3] ,
> और एक का रुख है आस्मां की जानिव ।

'जोश' की इस परस्पर-विरोधी प्रवृत्ति को समझने के लिए आवश्यक है कि उस वातावरण को जिसमे उनका पालन-पोषण हुआ और उन सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियो को सामने रखा जाय जिनकी उपस्थिति मे शायर ने अपनी आख खोली, क्योकि मनुष्य का सामाजिक वोध सदैव समाज की परिवर्तनशील भौतिक-परिस्थितियो ही से रसपान करता है और वह चीज़ जिसका नाम 'घुट्टी' है मनुष्य के जीवन मे वहुत वडा महत्व रखती है ।

शवीर हसन खा 'जोश' का जन्म १८९४ ई० मे मलीहाबाद (जिला लखनऊ) के एक जागीरदार घराने में हुआ । परदादा फकीर मोहम्मद 'गोया' अमीरुद्दौला की सेना मे रिसालदार

---

१. वहती हुई रेत　२. आकाश-गगा　३. धरती की ओर झुका हुआ है ।

भी थे और साहित्य-क्षेत्र के शहसवार भी। एक 'दीवान' (गजलो का संग्रह) और गद्य की एक प्रसिद्ध पुस्तक 'वस्ताने-हिकमत' यादगार छोडी। दादा मोहम्मद अहमद खा 'अहमद' और पिता वशीर अहमद खा 'वशीर' भी अच्छे शायर थे। यो 'जोश' ने उस सामन्ती वातावरण मे पहला श्वास लिया जिसमे काव्य-प्रवृत्ति के साथ-साथ घमंड, स्वेच्छाचार, अहं-भाव तथा आत्मश्लाघा अपने शिखर पर थी। गाँव का कोई व्यक्ति यदि तने हुए धनुप की तरह शरीर को दुहरा करके सलाम न करता था तो मारे कोड़ों के उसकी खाल उधेड़ दी जाती थी (स्वयं 'जोश' भी एक शरीर पर अपनी मजबूत छड़ी आज़मा चुके हैं)। प्रत्यक्ष है कि जन्म लेते ही 'जोश' इस वातावरण से अपना पिड न छुडा सकते थे अतएव उनमे भी वही 'गुण' उत्पन्न हो गये जो उनके पुरखों की विशेपता थी। अपने वाल्यकाल के सम्वन्ध मे स्वयं उनका कहना है कि :

"मैं लड़कपन मे वहुत वदमिजाज था। गुस्से की हालत यह थी कि मिजाज के खिलाफ एक ज़रा वात हुई नही कि मेरे रोये-रोये से चिनगारियाँ निकलने लगती थी। मेरा सव से प्यारा शगल यह था कि एक ऊँची-सी मेज पर वैठकर अपने हमउम्र वच्चो को जो जी में आता अनाप-शनाप दर्स (उपदेश) दिया करता था। दर्स देते वक्त मेरी मेज़ पर एक पतली-सी छड़ी रखी रहती थी और जो वच्चा ध्यान से मेरा दर्स नहीं सुनता था, उसे मैं छड़ी से इस वुरी तरह मारता था कि वेचारा चीखें

मार-मार कर रोने लगता था। मादी हैसियत (आर्थिक-रूप) से वह मेरी इतिहाई फारगुल्वाली (सम्पन्नता) का जमाना था। घर मे दौलत पानी की तरह बहती थी। इस पर हाकिम होने का तनतना भी था।"

इस वातावरण में पले हुए रईसज़ादे को, जिसे नई शिक्षा से पूरी तरह लाभान्वित होने का बहुत कम अवसर मिला† और जिसके स्वभाव में शुरू ही से उद्दण्डता थी, अत्यन्त भावुक और हठी बना दिया। युवावस्था मे पहुँचते-पहुँचते उनके कथनानुसार वे बडी सख्ती से रोजे, नमाज के पावद हो चुके थे। नमाज़ के समय सुगन्धित धूप जलाते और कमरा बन्द कर लेते थे। दाढी रख ली थी और चारपाई पर लेटना और मास खाना छोड दिया था और भावुकता इस सीमा पर पहुँच चुकी थी कि बात-बात पर उनके आंसू निकल आते थे। ऐसी अवस्था मे एकाएक यह होता है कि

"मेरी नमाज़ें तर्क[1] हो गई। दाढी मुँड गई, आंसू निकलना बन्द हो गये और अब मैं उस मजिल पर आ गया जहाँ हर पुराना एतकाद (विश्वास) और हर पुरानी रवायत (परम्परा) पर एतराज करने को जी चाहता है और एतराज भी अहानत-आमेज (अपमानजनक)।'

---

† 'जोश' ने घर पर उर्दू-फारसी की पाठ्य-पुस्तकें पढ़ीं। फिर अंग्रेजी शिक्षा के लिए सीतापुर स्कूल, जुबली स्कूल लखनऊ और सेंट पीटर कालेज आगरा और अलीगढ़ में भी प्रविष्ट हुए, लेकिन कहीं तरह कहीं भी न पढ़ सके।

१ छूट गई।

इस मंज़िल पर पहुँचकर उनकी भावुकता ने उनके सामाजिक सम्बन्धो पर कुठाराघात किया। उन्होने अपने पिता से विद्रोह किया†। पूरे परिवार से विद्रोह किया। धर्म, नैतिकता, राज्य, समाज, भगवान् अर्थात् हर उस चीज़ से विद्रोह किया जो उन्हे अपनी प्रकृति के प्रतिकूल प्रतीत हुई, और विद्रोह का यह प्रसग इतनी कटुता धारण कर गया कि कई अवसरो पर उन्होने केवल विद्रोह के लिए विद्रोह किया और स्वयं को सर्वोच्च समझ कर :

दूसरे आलम[1] मे हूँ, दुनियां से मेरी जंग है।

ऐसा दोटूक फैसला दिया और आत्मगौरव को इस सीमा तक ले गये :

हश्र[2] मे भी खुसरवा[3] शान से जायेगे हम।
और अगर पुरसिश[4] न होगी तो पलट आयेगे हम॥

उस समय उनकी आयु २३, २४ वर्ष की थी जब उन्होने पहले 'उमर खय्याम' और फिर 'हाफिज़' की शायरी का अध्ययन किया। फारसी भाषा के ये दोनो महान कवि अपने काल के

---

† 'मेरे पिता ने बड़ी नर्मी से मुझे समझाया, फिर धमकाया, मगर मुझ पर कोई असर न हुआ। मेरी बग़ावत बढ़ती ही चली गई। नतीजा यह हुआ कि मेरे बाप ने वसीयतनामा लिखकर मेरे पास भेज दिया कि अगर अब भी मैं अपनी ज़िद पर कायम रहूंगा तो सिर्फ १०० रुपये माहवार वजीफे के अलावा कुल जायदाद से महरूम कर दिया जाऊंगा। लेकिन मुझ पर इसका कोई असर न हुआ।"

१. संसार २. प्रलय के समय भगवान के सामने ३. बादशाही ४. आव-भगत

विद्रोही कवि थे। थोडे से भेद के साथ दोनो अपने समकालीन नैतिक तथा धार्मिक सिद्धान्तो को ढकोसला समझते थे और मनुष्य को इन ढकोसलो से स्वतत्र होकर समस्त सासारिक आनन्दो से आनन्दित होने का उपदेश देते थे (मदिरापान को उन्होने विशेष महत्व दिया)। उनके विचार मे जीवन के जो क्षण मनुष्य को प्राप्त हैं, वही उसके अपने हैं और उसे चाहिए कि उन क्षणो को अधिक से अधिक प्रसन्न रह कर व्यतीत करे। 'जोश' को ये सिद्धात अपनी विद्रोही प्रकृति के ठीक अनुकूल जँचे और उन्होने इन सिद्धान्तो को ज्यो का त्यो उठाकर अपना लिया। उमर खय्याम और हाफिज के सिद्धान्तो ही को नही, जहा से और जब भी उन्हे अपनी प्रकृति के अनुकूल सिद्धान्त मिले वे उनके व्यक्तित्व और फिर उनकी शायरी का अग बन गये। अध्ययन का अवसर मिला तो वे मिल्टन, शैले, बायरन और वर्डजवर्थ से भी प्रभावित हुए और आगे चलकर गेटे, दाते, शोपिनहार, रूसो और नतशे से भी, विशेष कर नतशे से वे बुरी तरह प्रभावित हुए। नतशे गेटे के बाद वाली पीढ़ी का दार्शनिक साहित्यकार था, जिसने जर्मनी में एक जबरदस्त केन्द्रीय राज्य और केन्द्रीय-शक्ति का समर्थन किया और श्रेष्ठ महामानव (Super Man) का ऐसा आदर्श चित्र खीचा, जो शारीरिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक अर्थात् समस्त प्रकार की महान् शक्तियो का सग्रह तथा प्रतिनिधि हो, जो ऊपर के वर्ग का प्रतिनिधि हो और जन-साधारण के अधिकारो की उपेक्षा करके शक्ति को अपनी

मंज़िल बना सके*। उसने हर प्रकार के नैतिक सिद्धान्त, अहिंसा और समानता को अस्वीकार किया। ईश्वर की सत्ता से इन्कार किया। संसार मे सब से बड़ा महत्व 'मैं' (अहंभाव) को दिया और स्त्री को पुरुष की सेवा और मनोविनोद का एक साधन सिद्ध किया। प्रत्यक्ष है कि 'जोश' की विद्रोही प्रकृति को इस प्रकार के सिद्धान्तो से कितना सीधा सम्बन्ध हो सकता था। उन्होंने नतशे के हर विचार को अपनी नीति और नारा बना लिया और अपनी हर रचना पर 'बिस्मिल्लाह' ('खुदा के नाम से शुरू करता हूँ') के स्थान पर 'ब नामे-कुव्वतो-हयात' ('शक्ति तथा जीवन के नाम') लिखना शुरू कर दिया।

उमर खय्याम, हाफिज और नतशे से प्रभावित होने के अतिरिक्त देश की राजनैतिक परिस्थितियों ने भी उन पर सीधा प्रभाव डाला और उनकी विद्रोही प्रवृत्ति को बडी शक्ति मिली। अतएव जब उन्होंने :

अलअमान-ो-अलहज़र[1] मेरी कड़क मेरा जलाल[2]।
खून सफ्फाकी,[3] गरज, तूफ़ान, बरबादी, क़ताल[4]॥
बरछियां, भाले, कमानें, तीर, तलवारें, कटार।
बरक़ी[5] परचम[6] अलम,[7] घोड़े, पयादे, शहसवार॥

---

*'शक्ति प्राप्त करो और प्रत्येक नैतिक सिद्धान्त को ठुकरा दो, चाहे इनके लिए तुम्हे कितने ही बलहीन व्यक्तियों को कुचलना पड़े…"(नतशे)

१. खुदा की पनाह २. तेज ३. हिंसात्मक ४. युद्ध
५. बिजली की-सी शक्ति (तेजी) रखने वाले ६.-७. पताका

आधियो से मेरी उड़ जाता है दुनिया का निजाम[1]।
रहम का अहसास है मेरी शरीयत[2] मे हराम॥
मौत है खूराक मेरी, मौत पर जीती हूँ मैं।
सेर होकर[3] गोश्त खाती हूँ, लहू पीती हूँ मैं॥
('बगावत')

ऐसी भयानक नज़्मे लिखना शुरू की तो देश की जनता ने जो अग्रेजी राज्य में बुरी तरह पिस रही थी, देश की स्वतन्त्रता के लिए मिट रही थी, मिट-मिट कर उभर रही थी और परतन्त्रता तथा अग्रेज के प्रति घृणा के हर बोल को छाती से लगा रही थी, 'जोश' के नारो को उठा लिया। वह बडा हगामो-भरा ज़माना था। इधर भारत अग्रेज़ी साम्राज्य की जजीरो में जकडा हुआ स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्नशील था और उधर रूस की क्रान्ति के बाद एक नया जीवन-दर्शन पूरे ससार को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा था। अग्रेज़ो ने इस नये जीवन-दर्शन का वास्तविक रूप-रग भारत तक नही पहुँचने दिया और न उस समय भारत मे श्रमजीवियो की कोई ऐसी सगठित सस्था थी जो वर्गवाद के प्रकाश मे उस स्वतन्त्रता-आन्दोलन और उस नये जीवन-दर्शन का विश्लेषण करके क्रान्तिकारी नेतृत्व कर सकती। अतएव इकिलाब (क्राति) को जिसके अर्थ सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन के हैं, स्वतन्त्रता के अर्थो मे लिया गया और 'शायरे-बगावत' जोश को 'शायरे-इकिलाब' की उपाधि दे दी गई।

---

१ व्यवस्था २ धर्म ३ पेट भरकर

'जोश' के सही साहित्यिक स्थान को समझने में सरदार जाफरी (उर्दू के प्रसिद्ध शायर और आलोचक) के कथनानुसार सबसे बड़ी भूल 'शायरे-इकिलाब' की उपाधि से होती है। इकिलाब का शब्द आज के आलोचकों की दृष्टि को गलत मार्ग पर डाल देता है और वे 'जोश' से ऐसी आशाएं बांधने लगते हैं जो उनकी शायरी पूरा नही कर सकती। 'जोश' की सीधी-सादी 'ऐजीटेशनल' नज्मो को जिन्होने निःसन्देह अपने काल मे बहुत बडी कार्यपूर्ति की है, भूल से क्रान्तिकारी नज्मों का नाम दिया गया*। यह भूल केवल राष्ट्रीय और विद्रोही

---

*खैर[1] ऐ सौदागरो ! अब है तो बस इस बात में।
वक्त के फरमान[2] के आगे झुका दो गरदनें॥

इक कहानी वक्त लिखेगा नये मजमून[3] की।
जिसकी सुर्खी[4] को जरूरत है तुम्हारे खून की॥

वक्त का फरमान अपना रुख बदल सकता नही।
मौत टल सकती है अब फ़रमान टल सकता नही॥

'ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फरज़न्दो (बेटो) के नाम' (जिसका एक टुकड़ा ऊपर दिया गया है), 'वफादाराने-अज़ली का पयाम शहनशाहे हिन्दोस्तान के नाम', 'शिकस्ते-ज़िन्दाँ का ख्वाब' ऐसी नज्मो की हज़ारो प्रतियाँ छपकर चोरी-छिपे बाँटी गईं, लाखो जबानो पर आईं और बहुत-से लोग स्टेज पर ये नज्में पढ़ने के कारण गिरफ्तार हुए। यहाँ यह चर्चा असंगत न होगी कि इस प्रकार की नज्मो ने (जिन्हे कला की महान् कसौटी पर परखते समय भावी आलोचक शायद रद्द कर देगा) 'जोश' ने उर्दू शायरी में एक नई प्रकार की लड़ाकू (Militant) शायरी की नींव डाली है। 'जोश' ने पहले स्वर की यह घनगरज, पहाड़ी नदियों जैसी तीव्र गति, उर्दू के किसी शायर को प्राप्त नहीं हुई। अभी तक उर्दू शायरी ने 'जोश' जैसा शब्दों का जादूगर पैदा नहीं किया।

१. रक्षा २. हुक्म ३. विषय ४. शीर्षक

ऐसी नज्मे या रुबाइया सुनायेंगे जिनमें मुल्लाओ और आस्तिको को फटकारा गया हो। सरकारी लोगो की महफिल होगी तो उन्हे अपनी नज्म 'मातमे-आज़ादी' (जो इस सकलन में मौजूद है) याद आजायेगी और स्त्रियो की सख्या अधिक होगी तो झूम-झूमकर 'हाये जवानी हाय जमाने' अलापना शुरू कर देंगे। मुल्ला लोग नाक-भौ सिकोडते हैं। सरकारी दफ्तरो मे चेमिगोइया होती हैं और स्त्रियाँ 'वाक आउट' तक कर जाती हैं लेकिन 'जोश' टस से मस नही होते। शायद उन्हे अनुभव है (और बिल्कुल उचित अनुभव है) कि अब वे ख्याति की उस सीढी पर पहुँच चुके हैं जहा किसी की 'असभ्यता' पर क्रोध की बजाय प्यार ही आ सकता है।

ये हैं 'जोश' साहब !

और यही हैं 'जोश' साहब जिन्होने चादी के चन्द सिक्कों के लिए, या न जाने किसलिए अपनी जीवन-भर की मान्यताओ, जीवन-भर की कमाई हुई ख्याति, आदर और सम्मानां पर स्वय अपने हाथो पानी फेर दिया और पिछले दिनो स्थायी रूप से पाकिस्तान चले गये। सुना है वहा वे इस्लाम के गीत गायेंगे लेकिन यह भी सुना है कि

'आखरी उम्र मे क्या खाक मुसलमां होगे !'

---

† उनकी साहित्य-सेवाओ के उपलक्ष मे भारत सरकार ने उन्हे 'पद्म विभूषण' (दूसरी श्रेणी) की उपाधि भी प्रदान की थी।

चयन

इस सकलन में 'जोश' के अपेक्षाकृत सुगम
'कलाम' ही का चयन किया गया है।

अल्हड़ कामनी

नाज़ से चौंकी है यूं इक मस्त अल्हड़ कामनी
जैसे इठलाती किरन से रसमसाती है नदी,
चांद-से माथे पै जुंबिश मे[1] महकती काकुलें[2]
काकुलों के जेरे-साया[3] झुटपुटे की मोहनी,
झिलमिलाती शमअ़ की जौ[4] मे ये रुख़्सारो का[5] रंग
छांव मे तारो को जैसे तख़्तिया अलमास की,[6]
करवटो मे कमसिनी के चलवलो की चुटकिया
अंखड़ियों मे भैरवी अगड़ाइयां लेती हुई,
करवटो से खुल रहा है जिस्म का यूं बन्द-बन्द
खिल रही है नाज़ से गोया चंबेली की कली,
सुबह के मसले हुए बिस्तर पे कामत[7] की फबन
'शाम' के तरशे हुए होटो पे जैसे बांसुरी,
यूं सनमख़ाने मे[8] पिछली रात फूलों की महक
सर से चादर के सरकते ही वो लपटें जिस्म की,

---

१. लहराती हुई २. लटें ३. छाया में ४ प्रकाश ५. कपोलों का ६. हीरों की ७. काया ८ बुतख़ाने में

कांपती लौ-से लबो-रुख़्सार पर[1] वो धूप-छांव
फूल-बन में जैसे उडते जुगनुओ की रोशनी,
खुफ्ता[2] बासी हार पर बिखरी हुई जुल्फे-दोता
और बिखरी जुल्फ में उलझी हुई चम्पाकली,
सुर्ख जोशन,[4] *लच्छिया काली, कलाई लालारग*[5]
रुख़[6] गुलाबी, शबनमी धानी, दुलाई सरदई,
बिन धुले मुखडे पे ऐसी मुस्कराहट, जिस तरह
पखडी की ओस पर पिछले पहर की चादनी,
जु बिशे-मिज़गा[7] मे गहर[8] वलवलो की चशमकें.
'जोश' के नगमात मे[10] जिस तरह मौजे-जिदगी[11]।

---

१ होटों और कपोलो पर २ सोये हुए ३. दोहरी लट (घने वाल) ४ तनुत्र ५ गुलावी ६ मुखडा ७ पलको की गति ८ परिपक्व ९ इशारे १० नग़मो में ११ जीवन-लहर

दोपट्टे को मसले, बदन को चुराये

कलेजे मे वो घाव है गम की लै से,
अभी तक नही जो भरे मौजे-मै[1] से,
उठाए है दिल ने सितम कैसे-कैसे,
मेरे वक्ते-रुखसत[2] वो आई थी जैसे,
खुदाया उदू[3] भी न इस तरह आए,
दोपट्टे को मसले, वदन को चुराए।

जिन आँखो के पर्दो मे तूफां था वरपा,
जिन आंखो मे तुगियाने-ख़ौफ़ो-हया[4] था,
जिन आँखों मे सैलावे-आहो-बुका[5] था,
जिन आंखों मे दिल करवटे ले रहा था,
उन आंखों पे मिज़गां की[6] चिलमन गिराए,
दोपट्टे को मसले, वदन को चुराए।

निगाहों मे ये वद्दुआएँ वरावर,
कि कट जाये वक्ते-परअफ़शां के शहपर[7],

---

१. शराब की लहर (शराव) २. विदा समय ३. शत्रु ४. भय तथा लज्जा का तूफान ५. आर्त्तनाद की वाढ ६. पलकों की ७. उड़ने वाले समय के पंख

धुआँ रेल का, और जुलफे-मुअम्बर[1] ,
कभी मुझ पर, और गाह[2] नज़रें घड़ी पर,
कलेजे से कुरबत[3] के लम्हे[4] लगाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

तहम्मुल[5] से आँखें झुकाने की कोशिश,
मुझे दर्दे-दिल से बचाने की कोशिश,
अज़ीज़ो से भी गम छुपाने की कोशिश,
फ़ुगां[6] को तबस्सुम[7] बनाने की कोशिश,
हिना[8] से कोई ज़ख्म जैसे छुपाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

नजर मुन्तशर[9], जिस्म तर, रग मद्धम,
ज़बा खुश्क, रुख्सार नम[10], जुल्फ बरहम[11]
तगय्युर सरापा[12] तहय्युर मुजस्सम[13],
सरासीमगी[14] मे वो चेहरे का आलम[15]
कि सोतो को जिस तरह तूफा जगाए,
दोपट्टे को मसले, बदन को चुराए।

तबो-ताब[16] चेहरे पै लाने की कोशिश,
अलम[17] को मुसर्रत जताने की कोशिश,

---

१. सुगन्धित केश २ कभी ३ सामीप्य ४ क्षण ५ सहनशीलता ६. आर्त्तनाद ७ मुस्कान ८ महदी ९ अस्तव्यस्त (भटकती हुई) १० कपोल गीले ११ अस्तव्यस्त केश १२ विकार की मूर्ति १३ आश्चर्य की मूर्ति १४ विक्षुब्धता १५ हालत १६ चमक १७ दुःख

उदासी को फ़रहत[1] दिखाने की कोशिश,
तबस्सुम[2] से आहे दबाने की कोशिश,
कोई जैसे आंधी मे दीपक जलाए,
दोपट्टे को मसले, वदन को चुराए।

जब इतना ही दुनिया से डरना था तुमको,
यमे-इश्क़[3] से पार उतरना था तुम को,
जो गरदावे दिल[4] से उभरना था तुम को,
जो मुझ से किनारा ही करना था तुम को,
मुझे मौजे-दरिया[5] से क्यों खेंच लाए,
दोपट्टे को मसले, वदन को चुराए।

---

१. प्रसन्नता २. मुस्कान ३. इश्क रूपी नदी ४. हृदय-रूपी भंवर ५. दरिया की लहरें।

तम्राकुब*

"मर्द हो इश्क से जिहाद[1] करो"
"अब मुझे भूलकर न याद करो"
"दिल से बीते दिनो की याद मिटाओ"
"न तो अब खुद रो न मुझको रुलाओ"
"भूल जाओ कही सुनी बातें"
"न तो वो दिन हैं अब न वो रातें"
"अब न वो मोड हैं, न वो गलिया"
"अब न वो फूल हैं न वोह कलिया"
"इस जहाँ से गुज़र चुकी हूँ मै"
"अब ये समझो कि मर चुकी हूँ मैं"
"एक दुखिया को और अब न सताओ"
"वन पड़े तो मेरी गली मे न आओ"
"मर्द हो इश्क से जिहाद करो"
"अब मुझे भूल कर न याद करो"

मेरे कानो मे, मेरे सीने मे
गूंजती रहती है ये आवाज़ें,
जिस तरफ जाऊ दिल हिलाती हैं
ये मेरे साथ साथ जाती हैं

---

* पीछा
१. धर्मयुद्ध

यादे-जावख़्श[1] से बगूलों से
ये सदाएँ[2] बराबर आती है
दिल का दरवाज़ा खटखटाती है

"भूल जाओ कही सुनी बाते
न तो वो दिन है अब न वो राते
मर्द हो इश्क से जिहाद करो
अब मुझे भूल कर न याद करो"

तंग आकर जिधर भी जाता हूँ
इन सदाओं को साथ पाता हूँ

सहने-गेती से[3] ओजे - गर्दूं से[4]
ताबे-अजुम से,[5] आबे-जेहूँ से[6]
बहरे-मव्वाज के[7] हबाबो से[8]
हिकमतो-शेर[9] की किताबो से
शोरिशो, गलग़लो, धमाको से
तेज़-रौ[10] गाड़ियो के पहियो से
शेरगोई[11] से शेरख़्वानी से[12]
हर हकीकत[13] से हर कहानी से

---

१. जीवन प्रदान करने वाली याद २. आवाजें ३. संसार के आंगन से ४. आकाश के शिखर से ५. सितारों की चमक से ६. दरिया (मध्य एशिया का एक दरिया) के पानी से ७. लहरें लेते हुए सागर के ८ बुलबुलों से ९. दर्शन तथा काव्य १०. तेज़ चलने वाली ११.-१२. शेर कहने (लिखने) शेर पढ़ने (सुनाने) से १३. वास्तविकता

चौड़ी सड़को से तग गलियो से
हिलती शाखो से खिलती कलियो से
शोरे-जलवत,[१] सकूते-खलवत से[२]
जु बिशे-ज़ौ,[३] जमूदे-ज़ुलमत से[४]
माबदो से,[५] शराब खानो से
मुतरिबे-खुशनवा को[६] तानो से
बाग से, मदरिसे से, जगल से
तपते सूरज, बरसते बादल से
ये सदाएँ बराबर आती हैं
दिल का दरवाज़ा खटखटाती हैं
"भूल जाओ कही सुनी बातें"
"न तो वो दिन हैं अब न वो रातें"
"एक दुखिया को और अब न सताओ"
"बन पडे तो मेरी गली में न आओ"
"अब जहाँ से गुजर चुकी हूँ मैं"
"तुम यह समझो कि मर चुकी हूँ मैं"
"मर्द हो इश्क से जिहाद करो"
"अब मुझे भूल कर न याद करो"

---

१ जनसमूह के शोर से २ एकान्त की चुप्पी से ३ प्रकाश की गति ४ अन्धकार की जडता से ५ उपासना-गृहो से ६ मीठे गले वाले गायक की

वादा फ़रामोशी

समझता था मैं तेरे अहदे-वफा मे[1],
पहाड़ों के मानिंद है उस्तवारी[2]।
मुझे तुझको पाकर यकी हो चला था,
कि अब खत्म है दौरे फर्यादो-ज़ारी[3]।
मे ये राहे-गम मे समझने लगा था,
कि अब वख़्त[4] की मोड़ पर है सवारी।
मिटेगी, मुझे ये गुमा[5] हो चला था,
मेरी तीरावख़्ती[6], मेरी सोगवारी[7]।
गरज़ ये उम्मीदे, ग़रज़ ये उमगें,
कि मवनी[8] थी जिन पर मेरी कामगारी।
चली उन पे सद हैफ[10], तलवार वनकर,
तेरी कमसिनी[11] की फरामोशकारी[12]।
मुदावा[13] कर ऐ चारासाज़े-मरीज़ां[14],
तमाशा कर[15] ऐ महवे–आईनादारी[16]।
"तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं" ॥
(ग़ालिब)

---

१. प्रेम निभाने के वचन में २. दृढ़ता ३. आर्त्तनाद का काल ४. भाग्य ५. भाशा (भ्रम) ६. दुर्भाग्य ७ क्रदन ८. आधारित ९. सफलता १० हजार अफसोस ११. अल्पवयस्कता १२. भूल जाना १३. इलाज १४. रोगियों के चिकित्सक १५. दर्शन दे १६. दर्पण देखने में मग्न

बिलकती यादें

सर्द मीना[1] का तसव्वुर[2] सुर्ख पैमाने की याद।
ऊद[3] की खुशबू मे फिर आई है मैखाने की याद ॥

गोशा-ए-दिल[4] मे पछाडें खा रही है देर से।
मस्त झोको मे जुनू[5] के रक्स फर्माने[6] की याद ॥

आई है रह-रहके गिरती बिजलियो के रूप मे।
एक शब[7] पर्दा उठाकर उनके दर[8] आने की याद ॥

ले रहा है हिचकिया एक एक फरजाने[9] का नाम।
भर रही है सिसकिया एक एक दीवाने की याद ॥

दिल मे आहे भर रही है, बाल बिखराए हुए।
लड़खडाने, गुनगुनाने, नाचने, गाने की याद ॥

मकबरो से आ रही है झुटपुटे की छाव मे।
एक एक करके रफीको के[10] बिछड जाने की याद ॥

'जोश' अब्रे-तीरह में[11] गुम है, मेरा माहे-मुनीर[12]।
कुश्ता[13] शम्मो के धुएँ मे जैसे परवाने की याद ॥

---

१. मद्य रखने का पात्र २ कल्पना ३. एक सुगधित लकडी ४. हृदय के कोने (हृदय) ५ उन्माद ६. नृत्य करने ७ रात ८ भीतर ९ बुद्धिमान १० साथियो के ११. काले बादलो में १२ प्रकाशमान चाद १३ बुझी हुई

लाइलाज ताखीर[1]

तुरवत[2] की तीरगी[3] मे उजाला हुआ तो क्या ?
जीने का वादे-मार्ग[4] सहारा हुआ तो क्या ?
मुद्दत से अव तो गेसु-ए-दानिश[5] है और दोश[6] ,
अव अवरे-जुल्फे-यार हवेदा[7] हुआ तो क्या ?
मजनूं के वलवलों ही पे जव ओस पड़ चुकी,
सहरा मे रक्से-नाक-ए लैला[8] हुआ तो क्या ?
तवदील हो चुका था जो दरिया सुराव[9] मे,
अव जाके फिर सुराव से दरिया हुआ तो क्या ?
खुद दर्द वन चुका है मुदावा-ए-जिंदगी,[10]
अव दर्दे-जि़दगी का मुदावा हुआ तो क्या ?
आंखो को 'जोश' वंद हुए देर हो गई,
अव वेनकाव आरिजे-सलमा[11] हुआ तो क्या ?

---

१. अनुपचार्य (अनिवार्य) देर २. कब्र ३. अंधकार ४. मृत्यु के बाद ५. बुद्धि रूपी केश ६. कंधा (अर्थात् अब उन्माद नही रहा) ७. प्रेयसी के केशों का बादल खुला ८. लैला की ऊंटनी का नृत्य ९. मरीचिका १०. जीवन का इलाज ११. सलमा (प्रेयसी) के कपोल

सूनी जन्नत

हा यही है वो मका, जन्नते-दौरे-कुहन[1] ।
कल था जिसकी अंजुमन मे हुस्ने-सदरे-अजुमन[2] ॥

हा ये पुल है रेल का, और ये चमकती पटरिया ।
दास्ता दर दास्तानो-दास्ता दर दास्ता[3] ॥

हा ये खिडकी है वही, और ये सलाखें हैं वही ।
झाकती थी जिनसे उस मुखडे की मीठी चादनी ॥

हा यही, जब पड़ रही थी एक दिन हल्की फुआर ।
गिर रहा था सुर्ख जुल्फो का सुनहरा आबशार ॥

चुभ रही है दिल मे मिसले-नेशतर[4] कम्बख्त सास ।
ये मका है, या कोई चुभती हुई सीने की फास ॥

आज इबरतनाक[5] है, बेरूह है, बेहोश है ।
कल हयातो-नगमा[6] था, अब सर्द है, खामोश है ॥

(२)

घर को अन्दर से भी देखू या सडक पर ही रहू ?
खैर अन्दर भी चलू, फरमाने-दिल[7] है क्या करूँ ।

---

१ बीते हुए काल का स्वर्ग-स्थान २ सभापति (घर की मालकिन) का सौंदर्य ३ अनेको कहानियाँ ४ नशतर की तरह ५ शोच्य ६ जीवन तथा सगीत ७ दिल का आदेश

उफ ये सुर्खी का निशां पहचानता हूं मैं इसे।
जानता है ये मुझे और जानता हूं मै इसे॥

हा यही आराम करती थी वो थक जाने के वाद।
हा, यहा वो वैठती थी गुस्ल फ़रमाने[1] के वाद॥

हा यहां वदले थे वेचैनी से ज़ानू एक दिन।
हां, यहा टपके थे उन आखों से आंसू एक दिन॥

मुस्कराकर इक अदा-ए-नौ से[2] देखा था यहां।
काटकर दांतो से इक दिन पान वख्शा था यहां॥

यां छिड़ा था किस्सा-ए-सोजे-निहानी[3] एक दिन।
इधर वैठे थे वो जव वरसा था पानी एक दिन॥

आज भी महफ़ूज़[4] है सूने दरो-दीवार मे।
वो तराने कल जो गलतां थे[5] लवे-गुलवार में[6]॥

ज़र्रे-ज़र्रे मे खटक महसूस होती है यहां।
दिल धडकने की धमक महसूस होती है यहां॥

खून में डूबा हुआ इन्सान का अफ़साना है।
कल जो घर इशरतकदा[7] था, आज मातमखाना[8] है॥

---

१. स्नान करने २. नई अदा से ३. भीतरी ज्वाला (प्रेम) की कहानी ४ सुरक्षित ५. उभरते थे ६. उन होंठो में जिन से फूल झड़ते थे ७. रतिगृह ८ शोकगृह

बरसी हुई आँखें

मैं समझता था कि अब रो न सकूगा ऐ 'जोश'।
दौलते-सब्र[1] कभी खो न सकूंगा ऐ 'जोश'।

इश्क की छाव भी देखूंगा तो कतराऊगा।
काबा-ए-अक्ल[2] से बाहर न कभी जाऊगा।।

आबरू इश्क के बाजार में खोते हैं कही ?
जिन्से-हिकमत[3] के खरीदार भी रोते हैं कही ?

अब न तडपूगा कभी इश्क के अफसानो पर।
अब जो रोऊगा तो रौंदे हुए इन्सानो पर।।

अब तमन्ना पे न अरमान पे दिल धडकेगा।
अब जो धडकेगा तो इन्सान पे दिल धड़केगा।।

चुभ सकेगा न मेरे दिल में इशारा कोई।
नौके-मिजगा पे न दमकेगा सितारा कोई।।

अब न याद आयेगा रगे-लबो-रुखसार[4] कभी।
दिल में गूंजेगी न पाजेब की झकार कभी।

अब कभी मुझसे न रूठा हुआ दिल बोलेगा।
अब तसव्वुर[5] किसी घूगट के न पट खोलेगा।।

अब पयाम आयेगा फूलो का न गुलशन से कोई।
अब न झाकेगा महो-साल के[6] रोजन[7] से कोई।।

---

१ धैर्य रूपी धन २ बुद्धि रूपी तीर्थ ३. दार्शनिक विचार-रूपी वस्तु ४ ओठो और कपोलों का रग ५ कल्पना ६ महीनो, सालो के ७ छिद्र

याद आयेगी न भूली हुई बातें मुझको।
अब पुकारेंगी न डूबी हुई रातें मुझको॥
लेकिन अफ़सोस कि ये संगे-यकी[1] टूट गया।
दामने-सब्र[2] मेरे हाथ से फिर छूट गया॥
जल उठी रूह मे फिर शमअ़ सनमखाने की।
ख़ाके-परवाना मे आग आगई परवाने की॥
जिस से रातें कभी रोशन थी वो जुगनू जागा।
चश्मे-खूंबस्ता[3] मे सोया हुआ आंसू जागा॥
अक्ल की धूप ढली, इश्क के तारे निकले।
बर्फ़ महताब[4] से पिघली तो शरारे[5] निकले॥
कान मे दौरे-मुहब्बत[6] के फसाने चहके।
सर पे बिछड़े हुए लम्हों के[7] तराने चहके॥
जिन से खिलती थी खदो-ख़ाल[8] की कलियां दिल की।
नौजवानी की उभर आई वो गलियां दिल की॥
दिल की चोटों को हवाओ ने दबाकर देखा।
फिर जवानी ने मुझे आंख उठाकर देखा॥
इश्क के तौर[9] मुहब्बत के वतीरे[10] उभरे।
दिल में डूबी हुई यादो के जज़ीरे[11] उभरे॥

---

१ विश्वास-रूपी पत्थर २. धैर्य का आंचल ३. ऐसी आंख जिसमें रक्त जमा हो ४. चांद ५ चिंगारियां ६. प्रेम-काल ७ क्षणों के ८. नयन-नक्श ९, १०. ढंग ११ टापू

ताजा होटो का जगाती हुई जादू आई।
कमसिनो[1] के नफसे-खाम[2] की खुशबू आई॥
क्या कहूँ, चर्ख[3] से क्या बारिशे-तनवीर[4] हुई।
किन लिहाफो की महक आके बगलगीर हुई॥

जिनकी लहरो ने दिखाया था किनारा मुझ को।
फिर उन्ही चादनी रातो ने पुकारा मुझ को॥
नाला[5] फिर रात को साबितो-सय्यार गया।
हम तो समझे थे कि ऐ 'जोश' ये आजार[6] गया॥

---

१ अल्पायु प्रेयसियों २ कच्चे श्वास ३ आकाश ४. प्रकाश की वर्षा ५ आर्तनाद ६ मुसीबत

वफ़ादाराने-अज़ली का पयाम

*शहनशाहे-हिंदोस्तां के नाम**

ताजपोशी का मुबारिक दिन है ऐ आलम-पनाह।
ऐ गरीबों के अमीर, ऐ मुफलिसों के बादशाह ॥

ऐ गदापेशों के[1] मुलतां, जाहिलों के ताजदार।
बेज़रों के[2] शाह, दरयूज़हगरों के[3] शहरयार[4] ॥

रास कल आई थी जैसे आपके मां बाप को।
यूंही रस्मे-ताजपोशी हो मुबारिक आपको ॥

दिल के दरिया नुत्क[5] की वादी में बह सकते नहीं।
आप की हैबत[6] से हम कुछ खुल के कह सकते नहीं ॥

लेकिन इतना डरते-डरते अर्ज़ करते हैं जरूर।
हिंद से वाकिफ किये जाते[7] नहीं शायद हुजूर ॥

आपके हिंदोस्तां के जिस्म पर बोटी नहीं।
तन पे इक धज्जी नहीं है, पेट को रोटी नहीं ॥

हर जबी पर[8] है शिकन[9] इस कजकुलाही[10] की क़सम।
हर मकां इक मक़बरा है, कसरे-शाही[11] की कसम ॥

---

* यह कविता जार्ज पष्टम की ताजपोशी के अवसर पर लिखी गई थी।

१. भिखमंगों के २ निर्धनों के ३. भिखारियों के ४. बादशाह ५. वाक्‌शक्ति ६ त्रास ७ पहचाने जाते ८. माथे पर ९. बल १० टेढ़ी टोपी (बादशाही) ११. राजभवन

नौजवा बिफरे हुए हैं भूख से दिल तग है।
ज़र्रे-ज़र्रे से अया[1] आसारे-हरबो-जग[2] है॥

किशवरे-हिन्दोस्ता[3] मे रात को हङ्गामे-ख्वाब[4]।
करवटें रह-रह के लेता है फजा[5] मे इकिलाब॥

गर्म है सोज़े-वगावत[6] से जवानो का दिमाग।
आंधिया आने को हैं ऐ बादशाही के चिराग॥

हम वफादाराने-पेशी,[7] हम गुलामाने-कुहन[8]।
कब्र जिनकी खुद चुकी, तैयार है जिनका कफन॥

तुदरौ[9] दरिया के धारे को हटा सकते नही।
नौजवानो की उमगो को दबा सकते नही॥

चौंकिये जल्दी, हवा-ए-तुदो-गर्म आने को है।
जर्रा-जर्रा आग में तबदील हो जाने को है॥

---

१ प्रकट　२ युद्ध के लक्षण　३. भारत देश　४ स्वप्न में
५ वातावरण　६ विद्रोह-ज्वाला　७ प्रथम पक्ति के वफ़ादार
८ पुराने दास　६ तीव्र गति से वहने वाले

मक़तले-कानपुर*

ऐ सियहरू[१], वेहया, वहशी, वदगुमां।
ऐ जबीने-अर्ज़ के[२] दाग, ऐ दानि-ए-हिन्दोस्तां[३] ॥

तुझ पै लानत ऐ फिरगी के गुलामे-वेशऊर[४]।
ये फज़ा-ए-सुलहपरवर,[५] ये कताले-कानपूर[६] ॥

तेगे-बुर्रा[७] और औरत का गला क्यो वदसिफात[८]।
छूट जायें तेरी नब्ज़े टूट जाये तेरे हात ॥

कोहनियों से ये तेरी कैसा टपकता है लहू ?
ये तो है ऐ सगदिल बच्चो का खूने-मुश्कबू[९] ॥

दर्द है तो उससे लड पहले जो मारे फिर मरे।
तू ने बच्चो को चवा डाला, खुदा गारत करे ॥

तू ने ओ बुज़दिल! लगाई है घरों में जिन के आग।
क्या उन्ही हाथों में लेगा रख्शे-आज़ादी की[१०] वाग ॥

इस तरह इन्सान और शिद्दत[११] करे इन्सान पर।
तुफ है तेरे दीन[१२] पर, लानत तेरे ईमान पर ॥

---

* यह कविता १९३१ में कानपुर में हुए हिन्दू-मुस्लिम फिसाद पर लिखी गई थी।

१ काले मुँह वाले २. धरती के माथे के ३ भारत के कमीन ४. मूर्ख दास ५. शान्तिवर्धक वातावरण ६. कानपुर का रक्तपात ७ काटने वाली तलवार ८ दुष्ट ९. सुगंधित रक्त १०. स्वतन्त्रता रूपी घोड़े की ११. अत्याचार १२. धर्म

ग़द्दार से ख़िताब

उगलियां उठेंगी दुनिया में तेरी औलाद पर।
गलगला[१] होगा वो आते हैं रजालत के पिसर[२] ॥

तेरी मस्तूरात का[३] बाज़ार मे होगा कयाम[४] ।
मारिज़े-दुश्नाम[५] मे तेरा लिया जायेगा नाम ॥

उस तरफ मुंह करके थूकेगा न कोई नौजवां ।
बर की हसरत में रहेगी तेरे घर की लडकियां ॥

क्या जवानो के गजब का जिक्र ओ इब्ने-खिताब[६] ।
सुन के तेरा नाम उड जायेगा बूढो का ख़िजाब ॥

फ़ाश[७] समझी जायेगी महलो मे तेरी दास्तां ।
कांप उठेंगी ज़िक्र से तेरे कंवारी लडकिया ॥

आयेगा तारीख़ का जिस वक्त जु विश[८] में कलम ।
कब्र तेरी दे उठेगी लौ जहन्नुम की कसम ॥

---

१ शोर २ नीचो की सतान ३ महिलाओ का ४ निवास
५ गाली के रूप में ६ उपाधि के पुत्र ७ अश्लील ८ गति

जवाले-जहांबानी*

नजर है किबला-ए-मजदूर[1] पर मेमारे-फितरत की[2] ।
तलातुम[3] में है कसरे-आहनी[4] सरमायादारी का ॥

शहाने-कजकुलह पर[5] तंग है आलम[6] की पहनाई[7] ।
दरे-दहका पे[8] दस्तक दे रही है शाने-दाराई[9] ॥

जहांबानी दहकती आग है गिरती हुई बिजली ।
हमेशा इसने दुनिया मे किया दौरे–महन[10] पैदा ॥

हजारो तजरबो के बाद अब इन्सां ये समझा है ।
कि शाही से नही होता शराफत का चलन पैदा ॥

सुन ऐ गाफिल कि ता रोजे-कयामत[11] नस्ले-शाही से ।
न होगा बज्मे-इन्सानी[12] का सदरे-अजुमन[13] पैदा ॥

न हो मगरूर अगर मायल-ब-नर्मी[14] भी हो सुलतानी ।
कि ये भी एक सूरत है तुझे गाफिल बनाने की ॥

गये वो दिन कि तू जिंदां[15] मे जब आंसू बहाता था ।
जरूरत है कफस[16] पर अब तुझे बिजली गिराने की ॥

---

* साम्राज्यशाही का पतन

१ पूज्य मजदूर २ प्रकृति के बनाने वाले की ३ तूफान ४ लोह-महल ५. बाके बादशाहो पर ६ ससार ७ विशालता ८. किसान के दरवाजे पर ९. बादशाही शान · 'दारा' ईरान का एक प्रसिद्ध बादशाह हो गुजरा है) १०. दुखो का काल ११. प्रलय तक १२. मानव-सभा १३ सभापति १४ नर्मी की ओर प्रवृत्त १५-१६. कारागार ।

शिकस्ते-जिंदां*

क्यो हिंद का जिंदा[1] काप रहा है गूंज रही हैं तकबीरें[2] ।
उकताये हैं शायद कुछ कैदी और तोड रहे हैं जंजीरें ।।

दीवारो के नीचे आ-आकर यूं जमअ हुए हैं जिंदानी ।
सीनो में तलातुम[3] बिजली का आंखो में झलकती शमशीरें ।।

भूखो की नज़र में बिजली है तोपो के दहाने ठडे हैं ।
तकदीर के लब[4] को जुंबिश है[5] दम तोड रही हैं तदबीरें[6] ।।

आखो मे गदा[7] की सुर्खी है बेनूर[8] है चेहरा सुलता[9] का ।
तखरीब[10] ने परचम[11] खोला है, सजदे मे पडी हैं तामीरें[12] ।।

क्या उनको खबर थी ज़ेरो-ज़बर[13] रखते थे जो रूहे-मिल्लतको[14] ।
उबलेंगे ज़मी से मारे-सियह्[15] बरसेंगी फलक[16] से शमशीरे ।।

क्या उनको खबर थी सीनो से जो खून चुराया करते थे ।
इक रोज इसी खामोशी से टपकेगी दहकती तकरीरे[17] ।।

सभलो कि वो जिंदा गूंज उठा, झपटो कि वो कैदी छूट गये ।
उठो कि वो बैठी दीवारें दौडो कि वो टूटी ज़ंजीरे ।।

---

* कारागार का टूटना

१ कारागार २ अल्लाह अकबर का नारा ३ तूफ़ान ४ होंट ५ हिल रहे हैं ६ उपाय ७. भिखारी ८ ज्योतिहीन ९ बादशाह १० ध्वस ११ पताका १२ निर्माण १३ दबाकर १४ जाति की आत्मा को १५ काले नाग १६ आकाश १७ भाषण

हुब्बे-वतन और मुसलमान

मज़हबी इख़्लाक के जज़्बे को ठुकराता है जो।
आदमी को आदमी का गोश्त खिलवाता है जो॥

फ़र्ज़ भी कर लूं कि हिन्दू हिन्द की रुसवाई है।
लेकिन इसको क्या करूं फिर भी वो मेरा भाई है॥

बाज़ आया मैं तो ऐसे मज़हबी ताऊन[1] से।
भाइयों का हाथ तर हो भाइयों के ख़ून से॥

तेरे लब पर[2] है इराको-शामो-मिस्रो-रोमो-चीं।
लेकिन अपने ही वतन के नाम से वाक़िफ़ नहीं॥

सबसे पहले मर्द बन हिन्दोस्तां के वास्ते।
हिन्द जाग उट्ठे तो फिर सारे जहां के वास्ते॥

---

१. प्लेग २. होंटों पर

इस्तक़लाले-मैकदा*

वक्त हूँ, हा वक्त, ऐ पैगम्बरे-तेगो-हिलाल[1] ।
ऐ रजजख्वाने-जलाल[2]-ओ ऐ गजलख्वाने-जमाल[3] ।।

जीस्त[4] की पलकें झपकती हैं मेरे अदाज पर ।
कारवाने-दहर[5] चलता है मेरी आवाज़ पर ।।

गर्दिशो का[6] शाह, सुबहो-शाम का सरखेल[7] हूँ ।
जुबिशो का कारवा, आवारगी का सेल[8] हूँ ।।

सुन कि अब मुडते हुए तूफा के धारे और हैं ।
अब मेरे चाद और हैं, मेरे सितारे और हैं ।।

अब मेरी रो और है, अब मेरे जादे[9] और हैं ।
अब मेरा अज़्म[10] और है, मेरे इरादे और हैं ।।

जा रहा हू आस्ताने-शह से[11] पैमा[12] तोड कर ।
कारवा आया है अब मेरा अनोखे मोड पर ।।

इस तेरे मैखाना-ए-रगी मे ऐ जादूबया ।
रह नही सकता है इग्लिस्तान अब पीरे-मुगा[13] ।।

---

* शराबखाने का स्थायित्व

१ तलवार और पहली रात के चाद के दूत २-३ तेज और सौंदर्य के गुण गानेवाले ४ जीवन ५ ससार का कारवान ६. कालचक्रों का ७ सरदार ८ धारा ९ मार्ग, मजिलें १० सकल्प ११. बादशाह की चौखट से १२. प्रण १३ अग्नि पूजकों का सरदार (साक़ी)

सर उठा, सीने को तान ऐ शायरे-सहबागुसार[1] ।
ले ये तेरे मैकदे की है कलीदे-ज़रनिगार[2] ॥

(२)

गोशे-गुल से[3] आसमां तक नाला-ए-बुलबुल[4] गया ।
मैकदे का कुफ़्ले-ज़र्री[5] लो वो चट से खुल गया ॥

(३)

(अन्दरूने-मैकदा)

(शराब-खाने के भीतर)

हाय ये क्या इब्तिला,[6] अफ़सुर्दगी[7], आवारगी ।
वेनवाई[8] , बेकरारी, वेदिली, वेचारगी ॥
परफ़िशा थी[9] जिसमे रूहे-बादह[10] वो रतले गिरां[11] ।
खाक के तोदों[12] के नीचे ले रहा है हिचकियां ॥
बामो-दर पर आबो-रोगन है न कदीलों में नूर[13]।
मसनदे-ज़र[14] तार तार औ' जामे-रंगी[15] चूर चूर ॥
ये घुटन, ये बू, ये तारीकी[16], ये सेलन, ये जमूद[17]।
एक पत्थर सा हवा के दोश पर,[18] अंबर न ऊद ॥

---

१. शराब छोडने वाले कवि २ स्वर्णिम ताली ३. फूल के कान से ४ बुलबुल का आर्त्तनाद ५. स्वर्णिम ताला ६ विपत्ति ७. उदासी ८. बेसामानी ९. पंख फटफटाती थी १०. शराब की आत्मा ११. बड़ा पैमाना १२. ढेरो । १३. छत और दरवाज़ो पर रोग़न है न कान्ति, न दीपपात्रो में ज्योति है । १४ स्वर्णिम सिहासन १५ रंगीन प्याला १६. अंधेरा १७. शैथिल्य १८ कंधे पर

चाक[1] हो हाँ चाक हो पर्दो अन्धेरी रात के।
नाखुने–खुरशीद,[2] उकदे खोल दे जर्रात के[3] ॥
बुलबुलो के चहचहो, छा जाओ सौते-जाग पर[4] ।
अब्र[5] के आवारा टुकड़ो, मिल के बरसो बाग पर ॥
कौसरो[6] गगा के यारो, एक हो मिलकर बहो।
मौत के गुल[7] को निगल लो ज़िन्दगी के चहचहो ॥
सख्तजां इफलास[8], छा जा नीमजाँ–अमलाक पर[9] ।
ऐ ज़मीने–सर्द बढकर हात डाल अफलाक पर[10] ॥
हा तजल्ली[11] के मुनारे बन के उभरो पस्तियो।
बोलते शहरो में हो तबदील गूँगी बस्तियो ॥
ऐ जवांहिम्मत अदीबो[12] खुफ्ता अज्मो को[13]जगाओ।
ऐ तजल्ली के पयम्बर[14] शायरो, शम्में जलाओ ॥
ऐ फजा[15]गुलपैरहन हो[16] ऐ सबा[17] इठला के चल।
ऐ ज़मी, अंगडाई ले, ऐ आस्मा करवट बदल ॥
हुक्म दे सरमायादारी को दिखाये अब न भाओ।
सनअतो ! मेहनतकशो के आस्तां पर[18]सर झुकाओ ॥
खाक को गर्माओ, कुहसारो पे[19] नेजे गाड कर।
सुर्ख किरनो, मुस्कराओ बादलों को फाड कर ॥

---

१ फट जाओ २. सूरज के नाखुन ३ अणुओं की गाँठें (समस्याएं) खोल दो ४ कव्वो की आवाज़ पर ५ बादल ६. स्वर्ग की नदी का नाम ७. शोर ८ निर्धनता ९ अधमुई पूँजी पर १०. आकाश पर ११. आलोक १२ साहसी लेखको १३. सोये हुए सकल्पों को १४. दूत १५ वातावरण १६ फूलो के वस्त्र पहन १७ प्रभात समीर १८ चौखट पर १९. पर्वतों पर

आग के धारो वहो, लोहे के पहियो गनगनाओ।
हाँ मशीनो घड़घड़ाओ, विजलियो जु विश मे आओ॥
मुस्करा तखरीव[1] पर, तखरीब रोती है यूँही।
धूप से लड, अब की तामीर[2] होती है यूँही॥
हाँ तन-आसानी की डायन को पटक दे ऐ वतन।
धूप पर अपने पसीने को छिड़क दे ऐ वतन॥
ओस पड़ जायेगी, खूनी धूप सवला जायेगी।
जब चलेगा झूम कर, सावन की रुत आ जायेगी॥

---

१. ध्वंस २. निर्माण

रिश्वत*

लोग हम से रोज़ कहते हैं ये आदत छोड़िये,
ये तिजारत है खिलाफ़े-आदमियत[1] छोड़िये,
इस से बदतर[2] लत[3] नही कोई, ये लत छोड़िये,
रोज़ अखबारो मे छपता है, कि रिश्वत छोड़िये,
भूल कर भी जो कोई लेता है रिश्वत, चोर है।
आज कौमी पागलो में रात दिन ये शोर है।।

किसको समझायें इसे खो दें तो फिर पायेंगे क्या ?
हम अगर रिश्वत नही लेंगे तो फिर खायेंगे क्या ?
कैद भी कर दें तो हम को राह पर लायेंगे क्या ?
'ये जुनूने-इश्क[4] के अदाज़ छुट जायेंगे क्या' ?
मुल्क भर को कैद कर दे किस के बस की बात है।
खैर से सब हैं, कोई दो चार दस की बात है।।

ये हवस[5], ये चोरबाजारी, ये महगाई, ये भाओ,
राई की कीमत हो जब परवत तो क्यो आये न ताओ,
अपनी तनख्वाहो के नाले में है पानी आध पाओ,
और लाखो टन की भारी अपने जीवन की है नाओ,
जब तलक रिश्वत न लें हम दाल गल सकती नहीं।
नाव तनख्वाहो के पानी में तो चल सकती नही।।

---

* इस कविता के २३ बद हैं। यहां केवल १७ दिये जा रहे हैं।

१ मानवता विरोधी २ बुरी ३ आदत ४ इश्क़ का स उन्माद ५ लोलुपता

ये है मिल वाला, वो बनिया, औ' ये साहूकार है,
ये है दूकांदार, वो है वैद, ये अत्तार है,
वो अगर ठग है, तो ये डाकू है, वो बटमार है,
आज हर गरदन मे काली जीत का इक हार है,

हैफ[1] ! मुल्को-क़ौम की ख़िदमतगुज़ारी के लिए।
रह गए हैं इक हमी ईमानदारी के लिए ॥

भूख के कानून मे ईमानदारी जुर्म है,
और बेईमानियो पर शर्मसारी[2] जुर्म है,
डाकुओ के दौर मे[3] परहेज़गारी जुर्म है,
जब हुकूमत ख़ाम[4] हो तो पुख़्ताकारी[5] जुर्म है,

लोग अटकाते हैं क्यों रोड़े हमारे काम मे ?
जिसको देखो, ख़ैर से नंगा है वो हम्माम मे ॥

देखिये जिसको दबाये है बगल मे वो छुरा,
फ़र्क़ क्या इसमे कि मुजरिम सख़्त है या भुरभुरा,
गम तो इसका है जमाना है कुछ ऐसा खुरदरा,
एक मुजरिम दूसरे मुजरिम को कहता है बुरा,

हम को जो चाहे सो कह ले हम तो रिश्वतख़ोर हैं।
नासहे-मुशफ़िक़[6] भी तो, अल्लाह रखे, चोर हैं ॥

तोंद वालों की तो हो आईनादारी,[7] वाहवा,
और हम भूखों के सर पर चांदमारी, वाहवा,
उनको ख़ातिर सुबह होते ही नहारी[8] वाहवा,
और हम चाटा करें ईमानदारी वाहवा,

---

१. खेद २. लज्जित होना ३. काल में ४ अपात्र ५ परिपक्व करना ६. स्नेहयुक्त धर्मोपदेशक ७ रक्षा ८. नाश्ता

सेठ जी तो खूब मोटर मे हवा खाते फिरें।
और हम सब जूतिया गलियो मे चटखाते फिरें॥

इस गिरानी[1] में भला क्या गुचा-ए-ईमा[2] खिले,
जौ के दाने सख्त हैं, तावे के सिक्के पिलपिले,
जायें कपडे के लिए तो दाम सुनकर दिल हिले,
जव गरेबा ता-ब-दामन आये तो[3] कपडा मिले,

जान भी दे दें तो सस्ते दाम मिल सकता नही।
आदमियत का कफन है दोस्तो, कपडा नही॥

सिर्फ इक पतलून सिलवाना कयामत हो गया,
वो सिलाई ली मिया दर्जी ने नगा कर दिया,
आपको मालूम भी है चल रही है क्या हवा,
सिर्फ इक टाई की कीमत घोट देती है गला,

हल्की टोपी सर पे रखते हैं तो चकराता है सर।
और जूते की तरफ बढिये तो झुक जाता है सर॥

थी बुजुर्गों की जो वनयाइन वो वनिया ले गया,
घर मे जो गाढी कमाई थी वो गाढा ले गया,
जिस्म की एक एक वोटी गोश्त वाला ले गया,
तन मे वाकी थी जो चरवी घी का पीपा ले गया,

आई तव रिश्वत की चिडिया पख अपने खोलकर।
वरना मर जाते मिया कुत्ते की वोली वोलकर॥

---

१ महंगाई २ धर्म रूपी कली ३ वस्त्र चीथडा-चीथडा हो जाय तो

पत्थरों को तोड़ते हैं आदमी के उस्तख्वा[1],
संगबारी[2] हो तो बन जाती है हिम्मत सायबा[3],
पेट मे लेती है लेकिन भूख जब अंगड़ाइयाँ,
और तो और, अपने बच्चे को चबा जाती है मा,

क्या बतायें बाजियां हैं किस कदर हारे हुए।
रिश्वतें फिर क्यो न ले हम भूख के मारे हुए?

आप है फज्ले-खुदा-ए-पाक[4] से कुर्सीनशी[5],
इतिजामे-सल्तनत[6] है आप के जे़रे-नगी[7],
आस्मां है आपका खादिम तो लौंडी है जमी,
आप खुद रिश्वत के जिम्मेदार है फिदवी[8] नही,

बख्शते हैं आप दरिया, कश्तिया खेते हैं हम।
आप देते है मवाके,[9] रिश्वतें लेते हैं हम॥

ठीक तो करते नही बुनियादे-नाहमवार[10] को,
दे रहे हैं गालिया गिरती हुई दीवार को,
सच बताऊं, जेब्र[11] ये देता नही सरकार को,
पालिये बीमारियो को, मारिये बीमार को,

इल्लते-रिश्वत को[12] इस दुनिया मे रुख़सत[13] कीजिये।
वरना रिश्वत की बढ़ाने मे इजाजत दीजिये॥

---

१. हड्डियां २. पत्थरों की वर्षा ३. छत्रछाया ४. भगवान की कृपा से ५. कुर्सी पर बैठे हुए (अधिकारी) ६. राज-काज ७. हुक्म के मातहत ८. सेवक ९. अवसर १०. असमतल नींव ११. बोझा १२. रिश्वत के दुर्व्यसन को १३. विदा

दस्तकारी के उफक पे[1] अब्र[2] बन कर छाइये,
जिहल[3] के ठंडे लहू को इल्म[4] से गरमाइये,
कारखाने कीजिये कायम, मशीनें लाइये,
उन ज़मीनों को जो महवे-ख्वाब[5] हैं चौंकाइये,

ख्वाह कुछ भी हो मढे ये बेल चढ सकती नही।
मुल्क में जब तक कि पैदावार बढ सकती नही॥

बादशाही तख्त पर है आज हर शै जलवागर,[6]
फिर रहे हैं ठोकरें खाते ज़रो-लालो-गोहर[7]
खास चीजें ? कीमतें उनकी तो है अफलाक पर[8]
आबखोरा[9] मुँह फुलाता है अठन्नी देखकर,

चौदह आने सेर की आवाज़ सुनकर आजकल।
लाल हो जाता है गुस्से से टमाटर आजकल॥

नसतरन[10] मे नाज़ बाकी है न गुल[11] मे रगो-बू,
अब तो है सहने-चमनमे[12] खारो-खस की[13] आबरू,
खुरदनी चीज़ों के[14] चेहरो से टपकता है लहू,
रुपिये का रग फक है अशरफी है ज़र्दरू[15],

हाल[16] के सिक्के को माज़ी[17] का जो सिक्का देख ले।
सौ रुपये के नोट के मुँह पर दवन्नी थूक दे॥

---

१ क्षितिज पर २ बादल ३ अपढता (मूढता) ४ विद्या निद्रा-मग्न ६ सुशोभित (अर्थात् हर वस्तु की कीमत बहुत बढ गई है) ७ धन ८. आकाश पर ९ मिट्टी का बना पानी पीने का बरतन १० श्वेत रग का एक सुगधित फूल ११ गुलाब का फूल १२ बाग़ १३ काटो और सूखी घास की १४ खाद्य पदार्थो के १५ जिसका मुँह पीला पड चुका है १६ वर्तमान १७ अतीत

वक्त से पहले ही आई है क़यामत देखिये,
मुँह को ढापे रो रही है आदमियत देखिये,
दूर जाकर किस लिए तसवीरे-इबरत[1] देखिये,
अपने किबला 'जोश' साहब ही की हालत देखिये,
इतनी गम्भीरी पे भी मर मर के जीते है जनाब।
सौ जतन करते है तो इक घूंट पीते है जनाब ॥

---

१. शोच्य दृश्य

आदमी

खुशिया मनाने पर भी है मजबूर आदमी,
आंसू बहाने पर भी है मजबूर आदमी,
और मुस्कराने पर भी है मजबूर आदमी,
दुनिया में आने पर भी है मजबूर आदमी,
दुनिया से जाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी[1] ।

मजबूरो–दिलशिकस्ता–ओ–रजूर[2] आदमी,
ऐ वाये आदमी ॥

क्या बात आदमी की कहूँ तुझ से हमनशी,[3]
इस नातवा[4] के कब्ज़ा–ए–कुदरत[5] मे कुछ नही,
रहता है गाह[6] हुजरा-ए-एजाज़[7] मे मकी[8]
पर ज़िन्दगी उलटती है जिस वक्त आस्ती,
इज्ज़त गवाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी ।

इन्सान को हवस है जिये सूरते-खिज़र,[9]
ऐसा कोई जतन हो कि बन जाइये अमर,

---

१. वाह रे आदमी २ विवश, भग्नहृदय, शोकग्रस्त ३ साथी ४ बेचारे (निर्बल) ५ हाथ ६ कभी ७ आध्यात्मिक उपासना की कोठरी ८. वासी ९ एक दीर्घ आयु पैगम्बर खिज्र की तरह

ता-रोजे-हश्र,[१] मौत न फटके इधर-उधर,
पर ज़ीस्त[२] जब बदलती है करवट कराह कर,
तो सर कटाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

दिल को बहुत है हँसने हँसाने की आरज़ू,
हर सुबहो-शाम जश्न मनाने की आरज़ू,
गाने की और ढोल बजाने की आरज़ू,
पीने की आरज़ू है पिलाने की आरज़ू,
और जहर खाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

हर दिल में है निशातो मुसर्रत[३] की तिशनगी,[४]
देखो जिसे वो चीख रहा है "खुशी, खुशी,"
इस कारगाहे-फितना में[५] लेकिन कभी कभी,
फरजन्दे-नौजवानो उरूसे-जमील[६] की,
मय्यत[७] उठाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

हर दिल का हुक्म है कि रफाकत[८] का दम भरो,
अहबाब को[९] हंसाओ मियाँ, आप भी हंसो,
छूटे न दोस्ती का तअ़ल्लुक, जो हो सो हो,

---

१. प्रलय तक २. जीवन ३. रस या आनन्द ४. प्यास ५ झगड़े के कारखाने (संसार) ६ नौजवान बेटे और सुन्दर दुल्हन ७. शव ८ साहचर्य ९ मित्रों को

लेकिन ज़रा सी देर मे याराने-ख़ास[1] को,
ठोकर लगाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

मक्खी भी बैठ जाये कभी नाक पर अगर,
गैरत से हिलने लगता है मरदानगी का सर,
इज्ज़त पे हरफ आये तो देता है बढ के सर,
और गाह[2] रोज़ गैर के विस्तर पै रात भर,
जोरू सुलाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

रिफअत-पसद[3] है वहुत इन्सान का मिज़ाज,[4]
परचम[5] उडा के, शान से रखता है सर पे ताज,
होता है ओछेपन के तसव्वुर[6] से इख्तिलाज[7],
लेकिन हर इक गली में व-फरमाने एहतजाज,[8]
बन्दर नचाने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

दिल हात से निकलता है जिस बुत की चाल से,
मौजें[9] लहू मे उठती हैं जिसके खयाल से,
सर पर पहाड गिरता है जिसके मलाल[10] से,
यारो कभी कभी उसी रगी-जमाल[11] से,
आखें चुराने पर भी है मजबूर आदमी,
ऐ वाये आदमी।

---

१. इष्टमित्रों २ कभी ३ ऊँचाई को पसन्द करने वाला ४ स्वभाव ५ पताका ६ कल्पना ७ हृदय कपन ८ आज्ञानुसार ९ लहरें १० दुःख ११ अति सुन्दरी

ग़ज़ल

फ़िक्र[1] ही ठहरी तो दिल को फ़िक्रे-ख़ूबा[2] क्यो न हो ?
ख़ाक होना है तो ख़ाके-कूए-जाना[3] क्यो न हो ?

दहर मे[4] ऐ ख़्वाजा[5] जब ठहरी असीरी[6] नागुज़ीर[7] ।
दिल असीरे-हल्क़ए-गेसूए-पेचा[8] क्यो न हो ?

ज़ीस्त[9] है जब मुस्तकिल आवारागर्दी ही का नाम ।
अक़्ल वालो ! फिर तवाफ़े-कूए-जाना[10] क्यो न हो ?

इक न इक हगामे पर मौक़ूफ़[11] है जब ज़िंदगी ।
मैकदे मे रिंद[12] रक़्सानो-गज़लख़्वा[13] क्यो न हो ?

जब फ़रेबो ही मे रहना है तो ऐ अहले-ख़िरद[14] ।
लज्जते-पैमाने-यारे-सुस्तपैमां[15] क्यो न हो ?

या जब आवेज़िश[16] ही ठहरी है तो ज़र्रे[17] छोड़कर ।
आदमी ख़ुरशीद[18] से दस्ते-गरेबा[19] क्यों न हो ?

इक न इक ज़ुलमत[20] से जब वाबस्ता रहना है तो 'जोश' ।
ज़िंदगी पर साया-ए-ज़ुल्फ़े-परीशां[21] क्यो न हो ?

---

१. चिन्ता २. अच्छी वस्तुओं की ३. प्रेयसी की गली की खाक ४. संसार में ५. स्वामिन् ६. बंदी होना ७. अनिवार्य ८. पेचदार केशों का बंदी ९. जीवन १०. प्रेयसी की गली के चक्कर काटना ११. आधारित १२. मद्यप १३. क्यों न नाचें गाएं १४. बुद्धि-जीवी १५. प्रतिज्ञा भंग करने वाली प्रेयसी की प्रतिज्ञा से आनन्दित १६. संघर्ष १७. अणु १८. सूरज १९. संघर्षशील २०. अन्धेरे २१. अस्तव्यस्त केशों की छाया

कुछ चुने हुए शेर

दिल की पामाली पे नादा को तरस खाने भी दो।
रोकने से फायदा नासेह[1] को समझाने भी दो॥

◇ ◇ ◇

तुझ को इन नीद की तरसी हुई आखो की कसम।
अपनी रातो को मेरे हिज्र[2] में बरबाद न कर॥

◇ ◇ ◇

मुस्कराते हुए यू आये वो मैखाने में।
रुक गई सास छलकते हुए पैमाने मे॥

◇ ◇ ◇

आज फिर वेदार[3] मेरे दिल में उनकी याद है।
ऐ ज़मी फर्याद है, ऐ आस्मा फर्याद है॥

◇ ◇ ◇

किस तरह कुर्बे-यार पर[4] शुक्रे-खुदा करू ?
अब भी है दिल मे कोई तमन्ना सी, क्या करू ?

◇ ◇ ◇

देख जाओ कि होश आया है।
फिर हमारी खबर न पाओगे॥

◇ ◇ ◇

शब को आखें लडी हुए खामोश।
सुबह देखा तो राज़ अफशा[5] था॥

---

१ उपदेशक २ विछोह ३ जागी हुई ४ प्रेयसी के सामीप्य पर
५. प्रकट

ऐसे चुप तो कभी न थे तुम 'जोश'।
सच बताओ ये माजरा क्या है ?

◇ ◇ ◇

हुई ये यकबयक[1] किस से मुलाकात।
कि खुद अपने को याद आने लगा मै ॥

◇ ◇ ◇

शिकस्ता[2] होगे ख्वाब[3] क्या-क्या, तबाह होगे शबाब[4] क्या-क्या।
चलेंगे पीरी[5] के वार कितने, मगर ज़माना जवां रहेगा ॥

◇ ◇ ◇

ये मोती हैं कि आसू, फैसला करने से डरता हू।
चमक पर जब हयाते-आरज़ी[6] की गौर करता हू ॥

◇ ◇ ◇

ऐ आस्मान ! तेरे खुदा का नही है खौफ।
डरते है ऐ ज़मीन ! तेरे आदमी से हम ॥

◇ ◇ ◇

वो खुद अता[7] करे तो जहन्नुम[8] भी है बहिश्त[9]।
मागी हुई निजात[10] मेरे काम की नही ॥

◇ ◇ ◇

मुझे मालूम है जो कुछ तमन्ना है रसूलो की[11]।
मगर क्या दरहकीकत[12] वो खुदा की ही तमन्ना है ?

◇ ◇ ◇

सैकड़ो हूरो का हर नेकी पे है इनको यकी।
सूद[13] लेने मे खुदा से भी ये शर्माते नही ॥

---

१. एकाएक २ भग्न ३. नाज़ ४. यौवन ५. बुढापे ६ अस्थाई जीवन ७ प्रदान ८ नरक ९ स्वर्ग १०. मुक्ति ११ पैगम्बरों (अवतारों) की १२ वास्तव में १३. मुसलमानों में सूद लेना हराम है

हरम[1] हो, मदरसा[2] हो, दैर[3] हो, मसजिद कि मैखाना।
यहा तो सिर्फ जलवे की[4] तमन्ना है कही आजा॥

◇ ◇ ◇

मेरे रोने का जिसमे किस्सा है।
उम्र का बहतरीन हिस्सा है॥

◇ ◇ ◇

मौत से कब्ल[5] ज़िन्दगी कैसी।
जी रहा हूँ अभी खुशी कैसी॥

◇ ◇ ◇

बर्ताव दोस्ती की हद से निकल गये हैं।
या तुम बदल गये हो या हम बदल गये हैं॥

◇ ◇ ◇

तुम्हारे सामने क्यो अश्क[6] मेरा बह नही सकता।
इसे महसूस कर सकता हूँ लेकिन कह नही सकता॥

◇ ◇ ◇

सब्र की ताकत जो कुछ दिल मे है खो देता हूँ मैं।
जब कोई हमदर्द मिलता है तो रो देता हूँ मैं॥

◇ ◇ ◇

जिस को तुम भूल गये याद करे कौन उसे।
जिसको तुम याद हो वो और किसे याद करे?

◇ ◇ ◇

---

१ काबा की चार-दीवारी २ पाठशाला ३ मन्दिर ४ साक्षात रूप में देखने की ५ पूर्व ६ आसू

ये सुन कर हमने मैखाने मे अपना नाम लिखवाया।
जो मैकश लड़खडाता है वो बाज़ू थाम लेते हैं॥

सहर[2] तक चाद मेरे सामने रखता है अक्स[3] उनका।
सितारे शब[4] को मेरे साथ उनका नाम लेते हैं॥

नही मालूम क्या खोई हुई शै याद आती है।
हवा जब सर्द चलती है कलेजा थाम लेते है॥

◇ ◇ ◇

जो मौका मिल गया तो खिज्र[5] से ये बात पूछेंगे।
जिसे हो जुस्तजू[6] अपनी, वो बेचारा कहा जाये?

◇ ◇ ◇

अब तो अक्सर ये हाल होता है।
सास लेना वबाल[7] होता है॥
आह करना तो क्या तेरे आगे।
बात करना मुहाल होता है॥

◇ ◇ ◇

कहा जाता है मुझ से ज़िन्दगी इनआमे-कुदरत[8] है।
सजा क्या होगी उसकी, जिसका ये इनआम है साकी?

तबस्सुम[9] इक बडी दौलत है, मैं भी इसका कायल हूं।
मगर ये आंसुओं का एक नीरी[10] नाम है साकी॥

---

१. मयर २. सुबह ३ प्रतिबिम्ब ४. रात ५. एक दीर्घआयु पैगम्बर, (खुदा की तलाश में भटकने वाला) ६ तलाश ७ अत्यन्त कठिन, मुसीबत ८ प्रकृति का पुरस्कार ९. मुस्कान १०. मयुर

लडकपन ज़िद मे रोता था, जवानी दिल को रोती है।
न जब आराम था साक़ी न अब आराम है साक़ी ॥

◇ ◇ ◇

कहते हैं अहले-जहा[१] इश्क़े-मजाज़ी[२] जिसको ।
वो भी है ऐन हक़ीक़त,[३] मुझे मालूम न था ॥
दिल जब आता है तो दुनिया के किसी गोशे[४] मे ।
नही लगती है तबीयत, मुझे मालूम न था ॥
जिसको भटका हुआ इन्सान खुशी कहता है।
वो भी है गम की अमानत, मुझे मालूम न था ॥
पहलु-ए-यार मे भी खुश नही होने देगी ।
इतनी ज़ालिम है मशिय्यत,[५] मुझे मालूम न था ॥

◇ ◇ ◇

हस रहे हैं शवे-वादा[६] वो मका में अपने।
हम इधर ऐश का सामान किये बैठे हैं ॥

◇ ◇ ◇

कहते हो 'गम से परेशान हुए जाते हैं'।
ये नही कहते कि इन्सान हुए जाते हैं ॥

◇ ◇ ◇

कोई हद ही नही इस एहतरामे-आदमियत की[७] ।
वदी[८] करता है दुश्मन और हम शरमाये जाते हैं ॥

◇ ◇ ◇

---

१ ससार वाले २ भौतिक प्रेम ३ बिल्कुल वास्तविकता ४. कोने ५ दैवेच्छा ६ वादे की रात को ७ मानव सम्मान की ८ दुष्टता

आई वो और मैं न था मौजूद ।
यूँ दुआये क़बूल होती है ।।

◇ ◇ ◇

दिल के लिए शरारे-जहन्नुम[1] से कम नही ।
वो हरफ़े-आरज़ू[2] जो ज़बा से अदा न हो ।।

◇ ◇ ◇

सितारा-ए-सुबह की[3] रसीली झपकती आंखो मे हैं फ़साने[4] ,
निगारे-महताब[5] की नशीली निगाह जादू जगा रही है ।
कली पे बेले की किस अदा से पड़ा है शबनम का एक मोती,
नही, ये हीरे की कील पहने कोई परी मुस्करा रही है ।
दलूका पहने हुए गुलाबी हर इक सुबक[6] पखड़ी खड़ी है,
रंगी हुई सुर्ख़ ओढ़नी का हवा मे पल्लू सुखा रही है ।

---

१. नरक की आग २ [illegible] ३ शुक्र के सितारे की
४. कहानियां ५. चांद की प्रतिमा ६. कोमल

दुनिया में आग लगी है

मौजे-हवा के[१] अन्दर शोला भडक रहा है,
गर्मी की दोपहर है, सूरज दहक रहा है।
तपती हुई ज़मी से आचें निकल रही हैं,
पत्थर सुलग रहे है, कानें पिघल रही हैं।
हर कल्ब[२] फुक रहा है, तहखाना चाहता है,
पर्दे में लू के गोया आलम[३] कराहता है।
लौ दे रहे हैं काटे और फूल कापते हैं,
तायर[४] सूक़ूत[५] में हैं, चौपाये हांपते है।
क्यो जिस्मे-नाज़नी[६] को लू मे जला रहे हो ?
रूमाल मुँह पै डाले किस सिम्त[७] जा रहे हो ?
वक्ते-जलाल[८] अपनी शाने-अताब[९] पर है,
ठहरो, कि दोपहर की गर्मी शबाब[१०] पर है।
देखोये मेरा मसकिन[११]किस दर्जापुरफज़ा[१२]है,
साया भी है मयस्सर दरिया भी बह रहा है।
पानी है सर्दो-शीरी[१३]खुनकी[१४]भी दिलनशीं हैं,
नज़दीक, दूर, कोई ऐसी जगह नही है।
दुखते हुए जिगर की हालत दिखाऊँ तुमको।
ठहरो तो बासुरी पर आहे सुनाऊँ तुमको ॥

---

१ हवा की लहरो के २ हृदय ३ ससार ४ पक्षी ५ मौनावस्था ६ सुन्दर शरीर ७ ओर ८. तेज का समय ९ प्रकोप की शान १० यौवन ११ निवास-स्थान १२ आनन्ददायक १३ ठडा मीठा १४. शीतलता

वनवासी बाबू

जगल के सर्द. गोशे[1] , रेल वल खाती हुई।
जुहल[2] के सीने पै जुल्फे-इल्म[3] लहराती हुई ॥

वज्मे-वहशत मे[4] तमद्दुन[5] नाज फरमाता हुआ।
तुन्द[6] ऐंजिन का धुआं मैदां पे वल खाता हुआ ॥

फ़ूल घवराये हुए-से पत्तियां डरती हुई।
गर्म पुरजो की सदाये[7] शोखियां करती हुई ॥

एक इसटेशन फसुर्दा[8] मुजमहिल,[9] तनहा, उदास।
झुटपुटे की वदलिया, पुरहौल[10] जगल आस-पास ॥

मलगजी[11] नाले, अंधेरी वादिया, हल्की फुवार।
वन के गिर्दो-पेश कोसो तक खजूरों की कतार ॥

कद्दे-आदम[12] घास, गहरी नद्दियां, ऊंचे पहाड।
एक इस्टेशन फकत ले दे के वाकी सव उजाड़ ॥

काश जाकर वावुओ से 'जोश' ये पूछे कोई।
जंगलो मे कट रही है किस तरह से जिंदगी ?

सच कहो, उठते हैं वादल जव अंधेरी रात में।
जव पपीहा कूक उठता है भरी वरसात में ॥

---

१ निर्जन स्थान २. मूढ़ता ३. ज्ञान रूपी केश ४. दीवानगी के दरबार में ५. संस्कृति ६. तीव्र गति से चलने वाले ७ आवाजें ८, ९. मलीन, खिन्न १०. भयानक ११. मैले १२. मनुष्य के कद इतनी ऊंची

शब को होता है घने जगल में जब बारिश का शोर।
साइया[1] भीगी हुई रातो में जब करता है शोर॥
रूह तो उस वक्त फर्ते-गम से[2] घबराती नही ?
तुम को अपने अहदे-माज़ी की[3] तो याद आती नही ?

१ सिह २ ग़म की अधिकता से ३ बीते दिनो की

सांस लो या खुश रहो

क़सम उस मौत की उठती जवानी में जो आती है,
उरूसे-नौ[1] को बेवा, मां को दीवाना बनाती है।
जहा से झुटपुटे के वक्त इक ताबूत[2] निकला हो,
कसम उस शब[3] की जो पहले पहल उस घर में आती है।
अज़ीजों की निगाहें ढूढती है मरने वालों को,
कसम उस सुबह की जो ग़म का ये मज़र[4] दिखाती है।
कसम साइल[5] के उस अहसास[6] की जब देख कर उसको,
सियाही दफअतन[7] कंजूस के माथे पे आती है।
कसम उन आनुओ की मां की आंखो से जो बहते हैं,
जिगर थामे हुए जब लाश पर बेटे की आती है।
कसम उस बेबसी की अपने शौहर के जनाजे पर,
कलेजा थाम कर जब ताज़ा दुल्हन सर झुकाती है।
नज़र पड़ते ही इक जीमर्तबा[8] मेहमां के चेहरे पर,
क़सम उस शर्म की मुफलिस[9] की आखो मे जो आती है।
कि ये दुनिया सरासर ख्वाब और ख्वाबे-परीशां[10] है।
'खुशी' आती नही सीने में जब तक 'सांस' आती है॥

---

१. नई दुल्हन २. अर्थी ३. रात ४. दृश्य ५. भिक्षु ६. अनुभूति ७. एकाएक ८. ज्वार (समुद्र) ९. निर्धन १०. बिखरा स्वप्न

इर्तिक़ा*

रगो-बू का ये सितारा[1] जिसमे है ये रेल-पेल ।
ज़िदगी का जिसमे खेला जा रहा है कब से खेल ॥
ये कुर्रह[2] ये आबो-गिल[3] की कारगाहे-हस्तो-बूद[4] ।
कब्ल-अज़-पैदायशे-तारीख[5] है जिसका वजूद ॥
रक्स[6] मे कब से है ये रक्कासा-ए-जादू-अदा[7] ।
ज़हन[8] मे आता नही अदाज़ा माहो-साल का[9] ॥
उम्र क्या है इस तमाशागाहे-अब्रो-बाद[10] की,
ग़ौर करते वक्त रुक जाती है सास ऐदाद की[11] ॥

◇ ◇ ◇

सब्र लेकिन मुद्दतो के बाद काम आ ही गया ।
तीरह-शब[12] को रोज़े-रोशन[13] का पयाम आ ही गया ॥
मुजदहे-हस्ती[14] लिये मौजे-सबा[15] आने लगी ।
कुलज़मो ने[16] अरगनू[17] छेडा ज़मी गाने लगी ॥

---

* विकास

१ रग तथा सुगधि का नक्षत्र (ससार) २ मडल ३ पानी मिट्टी ४ है और नही है का कार्यस्थल ५ इतिहास की सृष्टि से पूर्व ६ नृत्य ७ जादूभरी अदाओ वाली नर्तकी ८ मस्तिष्क ९ महीनो-वर्षो (समय) का १० बादल और वायु का तमाशा-घर ११ गणना (आकडो) की १२ अन्धेरी रात १३ उज्ज्वल दिन १४ अस्तित्व की मगल सूचना १५ प्रभात समीर की लहर १६ सागरो ने १७ एक प्रकार का बाजा (सगीत)

ओर फिर इक दिलफरेबो-दिलनशी[1] अंदाज़ से।
खाक से पौदो ने सर अपने निकाले नाज़ से॥

ओर फिर सब्ज़े[2] की जुंबिश से ज़मी लहरा गई।
इस सितारे की मसे भीगी जवानी आगई॥

ओर फिर कुछ थम के उट्ठी एक मौजे-सरखुशी[3]।
कुलज़मो मे ज़िदगी की अव्वली[4] जुंबिश हुई॥

खाक ने अंगडाई लेकर अपने जूड़े को छूआ।
आई सतहे-बहर से[5] मेलादख्वानी की सदा[6]॥

कोपले बन-बन के फूटे खाकदा[7] के वलवले।
मछलियों की शक्ल मे उभरे इरादे वहर[8] के॥

काह[9] की नब्ज़े भी ज़ेरे-कहकशां[10] चलने लगी।
पानियो पर सास लेती कश्तियां चलने लगी॥

दहर[11] के तारीक गोशे[12] तक मुनव्वर[13] होगये।
ज़िदगी की सास से झोंके मुअत्तर[14] होगये॥

ज़िदगी क्या दौलते-बेदार[15] इदराको-हवास[16]।
ज़िदगी आवाज़, इशारा, गीत, आगाही[17], कयास[18]॥

---

१ हृदय प्रवंचक तथा हृदयस्पर्शी २. हरियाली ३ नशे के सरूर की लहर ४. पहली ५ सागर के स्तर से ६ जन्म के समय गाये जाने वाले गीतों की आवाज़ ७ धरती ८. सागर ९. घास १०. आकाश-गंगा के नीचे ११. संसार १२ अन्धेरे कोने १३ आलोकित १४. सुगंधित १५. जागरूक सम्पत्ति १६ ज्ञान और अनुभूति १७ ज्ञान १८. अनुमान

इस सितारे की उमगो की रवानी ज़िदगी।
तुदो-तूफानी अनासर[१] की जवानी ज़िदगी ॥
मुतशिर तारीखे-दुनिया[२] की मुअल्लिफ[३] ज़िदगी।
दीन के रगी सहायफ की[४] मुसन्निफ[५] ज़िदगी ॥

◇ ◇ ◇

सोच तो किस मज़िले-तूफा से आई है हयात[६]।
कितनी मौतो को कुचल कर मुस्कराई है हयात ॥
इब्तिदाई[७] मज़िलो की बे-परो-बाली[८] को देख।
कहर-अफगन माद्दे[९] की हिम्मते-आली[१०] को देख ॥

---

१ तत्वो २ अस्तव्यस्त विश्व-इतिहास ३ सग्रहकर्ता ४ धर्म सम्बन्धी ग्रथो की ५ रचयिता ६ जीवन ७ प्रारम्भिक ८ जब न पख थे न बाल ९ भयकर (अत्यन्त शक्तिशाली) तत्व १० महान साहस

बेचारगी

ख़मोशी का समां है और मैं हूं।
दयारे-खुफ्तगा[1] है और मैं हूं॥

कभी खुद को भी इन्सा काश समझे।
ये सई-ए-रायगां[2] है और मैं हूं॥

कहूं किससे कि इस जमहूरियत मे।
हुजूमे-खुसरवां[3] है और मैं हूं॥

पड़ा हूं इक तरफ धूनी रमाये।
अतावे-रहरवां[4] है और मैं हूं॥

कहां हैं हमजवा[5] अल्लाह जाने।
फ़क़त[6] मेरी जवां है और मैं हूं॥

खमोशी है ज़मीं से आस्मां तक।
किसी की दास्ता है और मैं हूं॥

क़यामत है खुद अपने आशियां[7] में।
तलाशे-आशियां है और मैं हूं॥

जहां इक जुर्म है यादे-बहारां[8]।
वो लाफानी ख़िज़ां[9] है और मैं हूं॥

---

१. सोये हुओं का देश २ व्यर्थ प्रयत्न ३. बादशाहों का मनूर ४. राहियों का प्रकोप ५ [illegible]-भाषी ६. केवल ७. नीड़ ८ वसन्त ऋतु को याद करना ९. स्थायी पतझड़

तरसती हैं खरीदारो को आखें।
जवाहिर[1] की दुका है और मैं हूँ॥
नहीं आती अब आवाज़े-जरस[2] भी।
गुबारे-कारवा[3] है और मै हूँ॥
मआले-बन्दगी[4] ऐ 'जोश' तौबा।
खुदा-ए-मेहरबा[5] है और मैं हूँ॥

---

१. हीरों २ घटियो की आवाज ३ कारवान गुज़रने के बाद की छाई हुई धूल ४ उपासना का फल ५ कृपालु ईश्वर

शानदार दावे

करनो के[1] शानदार ये दावे कि ज़िन्दगी।
इक मेहरे-लायजाल[2] से पाती है रोशनी॥

जू-ए-उलूमो-चश्मा-ए-हिकमत[3] है ज़िन्दगी।
इन्साफो-अदलो-राफतो-रहमत[4] है ज़िन्दगी॥

हर इक शिकम[5] है रिज़क[6] का वादा लिए हुए।
हर वादा है फ़रागते-ईफा[7] लिए हुए॥

दुनिया नहीं वहिश्त है, दारुस्सलाम[8] है।
इक रहमते-तमाम[9] है इक फ़ंज़े-आम[10] है॥

तकदीर का गलत है कि हेटा है आदमी।
कुदरत[11] शफीक वाप है, वेटा है आदमी।

पल भर भी चश्मे-दहर[12] मे होती है जव खटक।
दिल मीरे-जिंदगी[13] का धडकता है देर तक॥

इन्सानियत का दर्द है कुदरत लिए हुए।
शायर का इश्क, मां की मुहब्बत लिए हुए॥

---

१. शताब्दियो के २. अविनाशी सूर्य ३. ज्ञानगंगा और दर्शन का स्रोत ४ न्याय, कृपा, अनुकम्पा आदि ५. पेट ६. रोटी ७. पूर्ण करने का अवकाश ८. पवित्र स्थान (स्वर्ग) ९, १०. प्रत्येक प्राणी के लिए दया, अनुकम्पा ११ प्रकृति १२. विश्व-नेत्र १३. जीवन के सरदार (ईश्वर)

जब वहा था करबला की खाक पर दरिया-ए-खूं[1] ।
दहर[2] पर नाज़िल[3] हुई थी कोई हैबतनाक[4] 'हूं'?
कर रहा था ज़हर जब सुकरात के दिल पर असर ।
अर्श से उतरी थी कोई 'हूं' बिसाते फर्श पर[5] ?
ईसा-ए-मरियम को जब खेंचा गया था दार पर[6] ।
हो गई थी क्या किसी 'हूं' से ज़मी ज़ेरो-ज़बर[7] ?
ऐटम ने रख दिया था भून कर जब इक शहर ।
कुलज़मे-तनबीह मे[8] आई थी क्या कोई लहर ?
बस्तिया गलतीदा थी[9] जब खून के गिरदाब[10] में ।
कोई 'हूं' गरजी थी क्या बगाला-ओ-पजाब मे ?
जब हुए थे आखरी अवतार गाधी जी हलाक ।
आई थी उस वक्त क्या कोई सदा-ए-हौलनाक[11] ?
इतनी चुप साधे हुए है किस लिए अर्शे-बरी[12] ।
क्यो हमारा आस्मानी बाप 'हूं' करता नही ?

---

१ खून की नदी २ ससार ३ अवतीर्ण ४ भयकर ५ धरती पर ६. फासी पर ७ उलट-पुलट ८ चेतावनी के सागर में (ईश्वर) ९ लोट रही थीं १० भवर ११ भयकर आवाज १२ सब से ऊंचा आकाश जहां भगवान रहता है

निज़ामे-नौ*

खेल हां ऐ नौ-ए-इन्सां[१] इन सियह रातों से खेल।
आज अगर तू ज़ुलमतो मे[२] पा-ब-जौला[३] है तो क्या॥

मुस्कराने के लिए बेचैन है सुबहे-वतन।
और चदे[४] ज़ुलमते-शामे-गरीबां[५] है तो क्या॥

खत्म हो जायेगा कल ये नारवा[६] पस्तो-बुलद[७]।
आज नाहमवार[८] सतहे-बज़्मे-इमका[९] है तो क्या॥

मुट्ठियों मे भर के अफ़शा[१०] चल चुका है इंकिलाब।
अब्रे-गम[११]ज़ुल्फे-जहाँ पर[१२]वाले-ज़ुबां[१३]है तो क्या॥

कल जवाहिर से[१४]गिरां होगी[१५]लहू की बूंद बूंद।
आज अपना खून पानी से भी अरज़ां[१६] है तो क्या॥

आ रही है आग लका की तरफ बढ़ती हुई।
आज रावन का महल सीता का जिंदा[१७] है तो क्या॥

हो रहा है तबअ्[१८] फ़र्माने-हयाते-जाविदां[१९]।
मौत अगर अब तक रगे-जा[२०]पर ख़रामां[२१]है तो क्या॥

---

* नव व्यवस्था

१. मनुष्य २ अन्धेरों में ३ पाँव में बेड़ी पड़ी हुई ४ थोड़ी देर ५. मुसीबत की शाम का अंधेरा ६ अनुचित ७ ऊँचा-नीचा ८. बदमस्त ९ संभावनाओं का स्तर १०. चमकीला पिष्ट ११. गम का बादल १२. संसार के केशों पर १३. गतिशील १४. हीरों से १५ महंगी होगी १६. सस्ता १७. कारागार १८ छप रहा है १९ अमर जीवन का आज्ञापत्र २०. शह-रग २१. विचरित

जानवर का जानवर भी कल न होगा मुद्दई[1] ।
आज अगर इन्सान का इन्सान दुश्मन है तो क्या ॥
'जोश' के अफकार को[2] मानेगी मुस्तकबिल की रूह ।
आज अगर रुसवा ये मर्दे-नामुसलमा है[3] तो क्या ॥

---

१ शत्रु २ विचारो, रचनाओ को ३ जो मुसलमान नही है (विश्वास का पात्र नहीं)

इन्सानियत का कोरस

वढे चलो, वढ़े चलो, रवां-दवा वढे चलो ।
वहादुरो वो खम हुई[1] वुलंदियां वढे चलो,
पये-सलाम[2] झुक चला वो आस्मा वढे चलो,
फलक[3] के उठ खडे हुए वो पासबा[4] वढ़े चलो,
ये माह[5] है वो मेहर[6] है ये कहकशा[7] वढे चलो,
लिये हुए जमीन को कशां-कशां[8] वढे चलो ।
रवा-दवां वढे चलो, रवां-दवां वढे चलो ॥

अभी निशा मिला नही है मंजिले-निजात का[9],
अभी तो दिन के वलवले मे वमवमा[10] है रात का,
अभी लिया नही है दिल ने जायजा[11] हयात[12] का,
अभी पता चला नही है सिर्रे-कायनात का[13],
अभी नजर नही हुई है राजदां, वढे चलो ।
रवां-दवा वढे चलो, रवा-दवा वढे चलो ॥

तुम्हारी जुस्तजू मे है रवा जहांपनाहियां[14],
फलक की शहरयारियां[15], जमी की कजकुलाहियां[16],

१ ऊंची २. सलाम के लिए ३. आसमान ४. रक्षक ५. चांद
६. सूरज ७. आकाशगंगा ८. खींचते हुए ९. मुक्ति की मंजिल का
१०. भय ११. [illegible] १२. जीवन १३. ब्रह्माण्ड के भेदों का
१४, १५, १६, बादशाहतें

तुम, और बिसाते-बेदिली पे[१] दिलशिकन[२] जमाहिया,
हर इक कदम पे हैं तो हो तवाहिया सियाहिया,
तवाहियो, सियाहियो के दर्मिया बढे चलो।
रवा-दवा बढे चलो, रवा-दवा बढे चलो॥

करीबे-खत्म रात है, रवा-दवा सियाहिया,
सफीना-हाए-रगो-बू के[३] खुल रहे हैं बादबा,
फलक घुला-घुला सा है जमीन है धुआ-धुआ,
उफक[४] की नर्म सावली सियाहियों के दर्मिया,
मचल रही हैं ज़रनिगार[५] सुर्खिया[६] बढे चलो।
रवा-दवा बढे चलो, रवा-दवा बढे चलो॥

---

१ बेदिली के विस्तर पर २ हृदयभजक ३ रग तथा सुगंधि की नौकाओ (नसार) के ४ क्षितिज ५ स्वर्णिम ६ लालिमाएँ

बुलंदबीनी०

कहा तसव्वुरे-पस्ती[१] बुलदबीनो को ।
हम आसमान से लाते नही जमीनों को ॥
हमे डराएगा क्या खाक बहरे-तूफाखेज[२] ।
कि हमने सैल[३] बनाया है खुद सफीनो को[४] ॥
किसी के दर पे[५] झुकाते नही जो सर अपना ।
उन्हे ये हक है चलें तानकर वो सीनों को ॥
मेरी निगाह मे हैं नाकारह[६] वो सुबक फनकार[७] ।
हसीनतर जो बनाते नही हसीनो को ॥
लगाओ बढ के अनासिर के[८] मुँह मे जल्द लगाम ।
कि इनकी पुश्त पे[९] मै कस चुका हूँ जीनो को ॥
कदीम[१०] काबा-ओ-काशी के हाजिबो[११] हुशियार ।
मुकामे-कुफ से[१२] ललकारता हूँ दीनो को[१३] ॥
बशर[१४] के जहन[१५] पे करनो से[१६] जो मुसल्लत[१७] हैं ।
बदल रहा हूँ गुमानो मे[१८] उन यकीनो को[१९] ॥
कल उनकी नस्ल का ऐ 'जोश' मैं बनूंगा इमाम[२०] ।
खबर करो मेरे मसलक[२१] के नुक्ता-चीनो को[२२] ॥

० उच्च-दृष्टि
१ अध:पतन की कल्पना २. प्रचण्ड सागर ३. बाढ़ ४. नावों को ५ दरवाजे (दहलीज) पर ६ प्रयोजन ७. तुच्छ कलाकार ८ तत्त्वों के ९ पीठ पर १० प्राचीन ११ देख-रेख करने वालो १२ नास्तिकता के स्थान से १३. धर्मों को १४. मनुष्य १५ मस्तिष्क १६ शताब्दियों से १७ सवार १८. भ्रमों मे १९ विश्वासों को २० नेता २१. मत २२ आलोचकों को

ऐतराफ़े-अज्ज़*

लोग कहते हैं कि मैं हूँ शायरे-जादूबया[1] ।
सदरे-माना[2] , दावरे-अलफाज़[3] , अमीरे-शायरा[4] ॥

और खुद मेरा भी कल तक, खैर से, था ये खयाल ।
शायरी के फन[5] मे हूँ मिनजुमला-ए-अहले-कमाल[6] ॥

लेकिन अब आई है जब इकगोना[7] मुझ में पुख्तगी[8] ।
ज़हन[9] के आईने पर कापा है अक्से-आगही[10] ॥

आस्मा जागा है सर मे और सीने मे ज़मी ।
अब मुझे महसूस होता है कि मै कुछ भी नही ॥

जिहल[11] की मज़िल मे था मुझको गरूरे-आगही[12] ।
इतनी लामहदूद[13] दुनिया और मेरी शायरी ॥

ज़ुल्फे-हस्ती[14] और इतने बेनिहायत[15] पेचो-खम[16] ।
उड़ गया रंगे-तअल्ली[17] खुल गया अपना भरम ॥

---

* अपनी हीनता मानना

१ वर्णन में जादू का सा प्रभाव रखने वाला कवि २ अर्थपूर्ण बात कहने वालो का नेता ३ शब्दो का न्यायाधीश ४. कवियो का सरदार ५ कला ६ अत्यन्त प्रतिभाशाली कवियो में से ७ ज़रा-सी ८ प्रौढ़ता ९ मस्तिष्क १० बुद्धि का प्रतिबिम्ब ११ मूढ़ता १२ बुद्धिमान होने का घमड १३ असीम १४ ब्रह्माण्ड-रूपी केश १५ असख्य १६ पेच (उलझाव) १७ शेखी का रग

मेरे शेरो मे फकत इक तायराना[1] रग है।
कुछ सियासी रंग है, कुछ आशिकाना रंग है॥

कुछ मनाजिर[2] कुछ मबाहिस[3] कुछ मसायल[4] कुछ ख्याल।
इक उचटता सा जमाल[5] इक सरबजानू[6] सा खयाल॥

मेरे कसरे-शेर मे[7] गोगाये[8] - फिक्रे-नातमाम[9]।
एक दर्दअंगेज[10] दरमां[11] इक शिकस्त-आमादा[12] जाम[13]॥

गाह[14] मौजे-चश्मो-अबरू[15] गाह सोजे-नाओनोश[16]।
गाह खलवत[17] की खमोशी गाह जलवत[18] का खरोश[19]॥

चहचहे कुछ मौसमो के, ज़मज़मे[20] कुछ जाम के।
दैरे-दिल[21] मे चद मुखडे मरमरी-असनाम[22] के॥

चद जुल्फो की सियाही, चद रुखसारो की[23] आब।
गाह हरफे-बेनवाई[24] गाह शोरे-इकिलाब॥

गाह मरने के अज़ायम[25] गाह जीने की उमग।
बस यही सतही[26] सी बातें, बस यही ओछे से रग॥

---

१ चिड़िया (जैसी) २. दृश्य ३ तर्क ४ समस्याएँ ५. सौन्दर्य ६. घुटनों पर झुका हुआ (नम्र) ७ शेरों के महल में ८ कोलाहल ९ अपूर्ण चिन्तन १० हृदय-विदारक ११ चिकित्सा १२ टूटने को तैयार १३ प्याला १४. कभी (कहीं) १५ नयन तथा भृकुटी की चिन्ता १६ खाने-पीने आदि की चिन्ता १७ एकान्त १८ उत्सव १९ [illegible] २० गान २१ हृदय-मन्दिर २२ संगमरमर की बनी हुई मूर्तियाँ (प्रतिमुख सुन्दरियाँ) २३ कपोलों की २४ निर्धनता की चर्चा २५. संकल्प २६ छिछली

ऐतराफे-अज्ज*

लोग कहते हैं कि मैं हूँ शायरे-जादूबया[1] ।
सदरे-माना[2] , दावरे-अलफाज[3] , अमीरे-शायरा[4] ॥
और खुद मेरा भी कल तक, खैर से, था ये खयाल ।
शायरी के फन[5] में हूँ मिनजुमला-ए-अहले-कमाल[6] ॥
लेकिन अब आई है जब इकगोना[7] मुझ में पुख्तगी[8] ।
ज़हन[9] के आईने पर कापा है अक्से-आगही[10] ॥
आस्मा जागा है सर में और सीने में ज़मी ।
अब मुझे महसूस होता है कि मैं कुछ भी नही ॥
जिहल[11] की मज़िल में था मुझको गरूरे-आगही[12] ।
इतनी लामहदूद[13] दुनिया और मेरी शायरी ॥
जुल्फे-हस्ती[14] और इतने वेनिहायत[15] पेचो-खम[16] ।
उड गया रंगे-तअल्ली[17] खुल गया अपना भरम ॥

---

* अपनी हीनता मानना

१ वर्णन में जादू का सा प्रभाव रखने वाला कवि २ अर्थपूर्ण वात कहने वालों का नेता ३ शब्दो का न्यायाधीश ४. कवियो का सरदार ५ कला ६ अत्यन्त प्रतिभाशाली कवियों में से ७ ज़रा-सी ८ प्रौढता ९ मस्तिष्क १० वुद्धि का प्रतिविम्ब ११ मूढता १२ वुद्धिमान होने का घमड १३ असीम १४ ब्रह्माण्ड-रूपी केश १५ असख्य १६ पेच (उलझाव) १७ शेखी का रग

मेरे शेरों मे फकत इक तायराना[1] रग है ।
कुछ सियासी रग है, कुछ आशिकाना रग है ॥

कुछ मनाज़िर[2] कुछ मबाहिस[3] कुछ मसायल[4] कुछ ख्याल ।
इक उचटता सा जमाल[5] इक सरवजानू[6] सा ख़याल ॥

मेरे कसरे-शेर मे[7] गोगाये[8] - फिक्रे-नातमाम[9] ।
एक दर्दअगेज[10]दरमा[11]इक शिकस्त-आमादा[12]जाम[13] ॥

गाह[14]सोजे-चश्मो-अबरू[15] गाह सोजे-नाओनोश[16] ।
गाह ख़लवत[17]की खमोशी गाह जलवत[18]का ख़रोश[19]॥

चहचहे कुछ मौसमों के, ज़मज़मे[20] कुछ जाम के ।
दैरे-दिल[21] मे चद मुखड़े मरमरी-असनाम[22] के ॥

चद जुलफों की सियाही, चंद रुखसारो की[23]आब ।
गाह हरफे-बेनवाई[24] गाह शोरे-इकिलाब ॥

गाह मरने के अजायम[25] गाह जीने की उमग ।
बस यही सतही[26] सी बाते, बस यही ओछे से रग ॥

---

१ छिछला (जारी) २. दृश्य ३ तर्क ४ समस्यायें ५ सौन्दर्य ६ घुटनों पर झुका हुआ (तुच्छ) ७ शेरों के महल में ८ कोलाहल ९. अपूर्ण चिन्तन १० हृदय-विदारक ११ चिकित्सा १२ टूटने को तैयार १३. प्याला १४. कभी (कहीं) १५ नयन तथा भृकुटी की चिन्ता १६ खाने-पीने आदि की चिन्ता १७ एकान्त १८ प्रत्यक्ष १९ कलरव २० गान २१. हृदय-मन्दिर २२. संगमरमर की बनी हुई मूर्तियां (अतिसुन्दर नारियां) २३ कपोलों की २४ निर्धनता की चर्चा २५. संकल्प २६ छिछली

बेखबर था मैं कि दुनिया राज़-अदर-राज़[1] है।
वो भी गहरी खामशी है जिसका नाम आवाज़ है॥

ये सुहाना बोसता[2] सर्वो-गुलो-शमशाद[3] का।
एक पल भर का खिलडरापन है अबरो-बाद का[4]॥

इब्तिदा-ओ-इतिहा[5] का इल्म नज़रो से निहा[6]।
टिमटिमाता सा दिया, दो ज़ुल्मतो के[7] दर्मिया॥

अंजुमन[8] में तखलिये[9] हैं, तखलियो मे अंजुमन।
हर शिकन[10] मे इक खिचावट, हर खिचावट में शिकन॥

हर गुमा[11] मे इक यकी-सा हर यकी मे सौ गुमा।
नाखुने-तदबीर[12] भी खुद एक गुत्थी बेअमा[13]॥

एक-एक गोशे से[14] पैदा वुसअते-कौनो-मका[15]।
एक-एक खोशे[16] मे पिनहा[17] सद बहारे-जाविदा[18]॥

वर्क[19] की लहरो की वुसअत[20] अलहफीजो-अलअमा[21]।
और मैं सिर्फ एक कौंदे की लपक का राज़दा[22]॥

राज़दां क्या, मदहख्वा[23] और मदहख्वा भी कमसवाद[24]।
नावलद[25], नादान, नावाकिफ, नदीदह[26], नामुराद॥

---

१ भेद के भीतर भेद २ फुलवाडी ३. सुन्दर वृक्षो और फूलो ४ वर्षा तथा वायु का ५ आदि तथा अन्त ६ निहित ७ दो लोको के अन्धकार के ८ सभा ९ एकात १० वलि ११ भ्रम १२ विधि का नाखून १३ अथाह १४ कोने से १५ ब्रह्माण्ड की-सी विशालता १६ बाल १७ निहित १८ सैकडो सतत वसन्त ऋतुए १९ बिजली २० विशालता २१ खुदा की पनाह २२ भेदी २३ गुणगायक २४ तुच्छ २५ अनभिज्ञ २६ अन्धा

क्यों न फिर समझूं सुवक[1] अपने सुखन[2] के रङ्ग को।
तुल्क[3] ने अलमास[4] के बदले तराशा संग[5] को॥

लैला-ए-आफाक[6] उलटती ही रही पैहम[7] नक़ाब।
और यहां औरत, मनाज़िर[8], इश्क, सहबा[9], इंकिलाब॥

पा रहा हू शायद अब इस तीरह-हल्के से[10] नजात[11]।
क्योकि अब पेशे-नजर[12] हैं उकदाहाये-कायनात[13]॥

ये भिची, उलझी जमी, ये पेच-दर-पेच आस्मा।
अलअमानो-अलअमानो-अलअमानो-अलअमां[14]॥

इक नफस[15] का तार और ये शोरे-उम्रे-जाविदा[16]।
इक कड़ी और उस में ज़ंजीरों के इतने कारवा॥

एक-एक लम्हे मे इतने कारवाने-इकिलाब।
एक-एक जर्रे मे इतने माहतावो-आफताव[17]॥

इक नदा[18] और उसमें ये लाखो हवाई दायरे।
जिसके घोवो को[19] अगर चुन ले तो दुनिया गूज उठे॥

एक बूंद और हफ्त-कुलज़म[20] के हिला देने का जोश।
एक गूगा ख्वाब और ताबीर[21] का इतना ख़रोश[22]।

---

१ [illegible] २ शायरी ३ [illegible] ४ हीरे ५. पत्थर ६. संसार [illegible] ७ निरंतर ८. दृश्य ९. शराब १० अन्धेरे क्षेत्र से ११. मुक्ति १२ नज़र के सामने १३. ब्रह्माण्ड के गूढ रहस्य १४ [illegible] १५ श्वास १६ अमर जीवन का शोर १७ चांद सूरज १८. आवाज १९ [illegible] २० सात सागर २१ [illegible] २२. शोर

इक कली और उसमे सदियो की मता-ए-रगो-बू[1] ।
सिर्फ इक लम्हे[2] की रग में और करनो का[3] लहू ॥
हर कदम पर नसब[4] और असरार के[5] इतने खयाम[6] ।
और इस मज़िल मे मेरी शायरी मेरा कलाम ॥
जिस मे राज़े-आसमा है और न असरारे-ज़मी ।
एक खस[7] , इक दाना, इक जौ, एक ज़र्रा भी नही ॥
नौ-ए-इन्सानी[8] को जब मिल जाएगी रफ्तारे-नूर[9] ।
शायरे-आज़म[10] का तब होगा कहीं जाकर ज़हूर[11] ।
खाक से फूटेगी जब उम्रे-अबद[12] की रोशनी ।
झाड देगी मौत को दामन[13] से जिस दिन ज़िदगी ॥
जब हमारी जूतियो की गर्द होगी कहकशा[14] ।
तब जनेगी नस्ले-आदम[15] शायरे-जादूबया ॥
फिक्र[16] मे कामिल[17] न फन्ने-शेर[18] मे यकता[19] हूँ मैं ।
कुछ अगर हूँ तो नकीबे-शायरे-फर्दा[20] हूँ मैं ॥

---

१ सुगधि तथा रग की पूजी २ क्षण ३ शताब्दियो का ४ गडे हुए ५ रहस्यो के ६. खेमे ७ तिनका ८ मानव जाति ९ प्रकाश की सी तीव्र गति १० महाकवि ११ प्रकटीकरण १२ स्थायी जीवन १३ पल्लू १४ आकाश-गगा १५ मानव जाति १६ चिंतन १७ सिद्ध १८ काव्यकला १९ अद्वितीय २० भविष्य के शायर का मागध

रुबाइयाँ

हर इल्मो-यकीं[1] है इक गुमां[2] ऐ साकी,
हर आन[3] है इक ख़्वाबे-गिरां[4] ऐ साकी,
अपने को कहीं रख के मैं भूला हूँ ज़रूर,
लेकिन ये नहीं याद कहाँ ऐ साकी।

◇ ◇ ◇

किस नहिज से[5] गरदनों के फंदे खोलें ?
किस बाट से दहर[6] के हवादिस[7] तोलें ?
अपने अल्लाह से ये बातें पूछो,
क्या हम को गर्ज़ पड़ी है, हम क्यों बोलें ?

◇ ◇ ◇

क्यों मुझ से तकाज़ा है कि 'फंदे खोलो',
किस तरह कटे ये पाप, बोलो, बोलो,
बन्दे की तरफ़ शौक़ से आना यारो,
मायूस अल्लाह से तो पहले हो लो।

१. ज्ञान, विश्वास २. भ्रान्ति ३. प्रतिक्षण ४. गहरा स्वप्न
५. तरीके से ६. संसार ७. दुर्घटनाएँ

बेचारा जिगर के ज़ख्म धो लेता है,
सर बालिशे-ग़म पे[1] रख के सो लेता है,
जब राग सुने तो भेद दिल पर ये खुला,
दुखिया इन्सान यूं भी रो लेता है।

◇ ◇ ◇

इब्ने-आदम[2] को साहिबे-जाह[3] करो,
कम्बख्त को अब और न गुमराह करो,
'अल्लाह' से इन्सान है कब का वाकिफ,
इन्सान से इन्सान को आगाह करो।

◇ ◇ ◇

मिकराज़[4] खुद अपने को कतर जाती है,
जम जाती है लौ, आग ठिठर जाती है,
जितना भी उभारती है जिस चीज़ को अक्ल,
उतना ही वो गार मे उतर जाती है।

◇ ◇ ◇

जो चीज इकहरी थी वो दोहरी निकली,
सुलझी हुई जो बात थी उलझी निकली,
सीपी तोडी तो उस से मोती निकला,
मोती तोडा तो उसमे सीपी निकली।

---

१ गम के तकिये पर २ मनुष्य ३ वैभवशाली ४ कैंची

करती है गुहर[1] को अश्कबारी[2] पैदा,
तमकीन[3] को मौजे-बेकरारी[4] पैदा,
सौ बार चमन मे जब तड़पती है नसीम[5],
होती है कली पर एक धारी पैदा।

◇ ◇ ◇

इक उम्र से जहर पी रहा हूँ ऐ दोस्त,
सीने के शिगाफ़[6] सी रहा हूँ ऐ दोस्त,
गोया सरे-कोहसार[7] तनहा पौदा,
यूँ अपने वतन मे जी रहा हू ऐ दोस्त।

◇ ◇ ◇

मर-मर के जब इक बला से पीछा छूटा,
इक आफ़ते-ताजादम ने[8] आकर लूटा,
इक आबला-ए-नौ मे हुआ सीना दोचार[9],
जैसे ही पुराना कोई छाला टूटा।

◇ ◇ ◇

झिझको, ठिठको न एक पल भी शरमाओ,
ये दिल तो अज़ल[10] ही से तुम्हारा है पड़ाओ,
ऐ जुमला[11] हवादिसो-गमूमो-आफ़ात[12],
बन्दे ही का ये गरीबखाना[13] है दर आओ[14]।

---

१ मोती २. आसुओ की वर्षा ३ उच्चस्थान ४ व्याकुलता की लहर ५ पवन ६ छिद्र ७ पर्वत के शिखर पर ८ नई मुसीबत ने ९ हृदय मे नया छाला उत्पन्न हो गया १० आदिकाल ११. समस्त १२. विपत्तियो, दुखो, मुसीबतो १३ घर १४. आजाओ

ये हुक्म है, चुप साध लो, आँखें न उठाओ,
दो खूब अजाँ, घूम से नाकूस[1] बजाओ,
गोबर पे चने चाब के पानी पीलो,
बिस्तर पे गिरो, डकार लो और मर जाओ।

◇ ◇ ◇

दायम[2] हरकत है जिन्दगी की दमसाज[3],
लरजा[4] जो नशेब[5] है, तो जुंबा[6] है फराज[7],
मजिल पे कमर न खोल ऐ बदा-ए-राह[8],
मजिल तो है इक ताजा सफर का आगाज[9]।

◇ ◇ ◇

दुख शेर से बेहिसाब पाये मैंने,
हर सास में सौ अजाब[10] पाये मैंने,
उगले जब बहूरे-दिल[11] ने सौ लालो-गुहर[12],
तहसीन[13] के कुछ हुबाब[14] पाये मैंने।

◇ ◇ ◇

सर घूम रहा है नाव खेते-खेते,
अपने को फरेबे-ऐश देते देते,
उफ जहदे-हयात[15]! थक गया हूँ माबूद[16],
दम टूट चुका है सास लेते लेते।

---

१ शंख २ स्थायी ३ मित्र ४ सक्रिय ५ तल ६ सक्रिय ऊचाई ८ राही ९ प्रारम्भ १० कष्ट ११ हृदय-सागर २ मोती १३ प्रशसा १४ पानी के बुलबुले १५ जीवन-सग्राम १ पूज्य (ईश्वर)

ये रात गये ऐशे-तरब[1] के हंगाम[2],
परतौ[3] ये पड़ा पुश्त[4] से किस का सरे-जाम[5],
'ये कौन है ?' 'जबरील[6] हूँ' 'क्यो आये हो ?'
'सरकार ! फ़लक[7] के नाम कोई पैगाम ?'

◇ ◇ ◇

जुल्फे है कि ज़ोलीदा-खयालात की[8] रात,
ऐ जाने-हया[9] ! ठहर भी जा रात की रात,
इन तीरह[10] घटाओं मे किधर जायेगी,
शानो पे[11] लिए हुए ये बरसात की रात।

◇ ◇ ◇

शबनम से न गुल[12] धुले तो मेरा ज़िम्मा,
मोती न अगर रुले तो मेरा ज़िम्मा,
इक दर[13] जो हुआ बंद तो आई ये सदा[14],
सौ दर न अगर खुलें तो मेरा ज़िम्मा।

◇ ◇ ◇

हर बारे-जफ़ाजू[15] को निबाहा मैंने,
समझा हर ज़ख्मे-दिल[16] को फाहा मैंने,
लेकिन अपने से बढ के अब तक वल्लाह[17] !
दुनिया में किसी को नही चाहा मैंने।

---

१. अति आनन्द २. समय ३. प्रतिबिम्ब ४ पीछे ५ शराब के प्याले पर ६ एक फरिश्ता जो खुदा के आदेश पैगम्बरों तक पहुँचाता है। ७ आकाश (नभ) ८ उलझे विचारों की ९ लज्जा की जान (लजीली प्रेयसी) १० काली ११. कंधों पर १२. फूल १३ दरवाजा १४. आवाज १५ अत्याचार नित १६ हृदय का घाव १७ ईश्वर की सौगंध, सच कहता हूँ।

शानो पे है छिटकी हुई जुल्फो की लटक,
ऐंजा मे[१] है ताजा शाखे-गुल[२] की सी लचक,
और उसमें ये अगडाई का आलम कि न पूछ,
बिखरी हुई बदलियो मे जिस तरह धुनक[३]।

◇ ◇ ◇

हर सुबह है इक अजीब सौदा[४] मुझको,
हर शाम है इक-तरफा तकाजा मुझको,
जुग बीत गया मगर ये अब तक न खुला,
आखिर किस शै की है तमन्ना मुझको ?

◇ ◇ ◇

जो दिल की है वो बात नही होती है,
जो दिन न हो वो रात नही होती है,
हस्ती[५] है वो तूफान कि अक्सर 'जोश',
अपने से मुलाकात नही होती है।

◇ ◇ ◇

ऐ ख्वाब बता, यही है बागे-रिजवा[६] ?
हूरो का कही पता, न गिलमा का[७] निशा,
इक कुंज मे खामोशो-मलूलो-तनहा[८],
बेचारे टहल रहे हैं अल्लाह मिया।

---

१ अगो में २ नई उगी हुई फूलो की डाली ३ इंद्रधनुष ४ उन्माद
५ जीवन ६ जन्नत (स्वर्ग) ७ लौंडो का ८ मौन, उदास, अकेले

आजा, मरता हूँ गम के मारे आजा,
भीगी हुई रात के गरारे[1] आजा,
ऐ शाम का वादा करके जाने वाले,
अब डूब रहे है देख, तारे, आजा।

◇ ◇ ◇

देता नही बोस्ता[2] सहारा मुझको,
करती नही बुलबुल भी इशारा मुझको,
मुरझाए हुए फूल ने हसरत से कहा,
अब तोड के फेंक दो खुदा-रा[3] मुझको।

◇ ◇ ◇

नेकी की हमे राह बताते रहिये,
अल्लाह से हर आन[4] डराते रहिये,
पीने वालो को कहते रहिये बेदीन[5],
और शौक से माले-गैर खाते रहिये।

◇ ◇ ◇

हर रग मे इबलीस[6] मजा देता है,
इन्सान को बहर-तौर[7] दगा देता है,
कर सकते नही गुनाह जो अहमक उनको,
बेरूह[8] नमाजो मे लगा देता है।

१. निशानी २. बाग ३. भगवान के लिए ४. प्रतिक्षण (हर समय)
५. नास्तिक ६. शैतान ७. हर हाल में ८. निर्जीव ([illegible])

जन्नत के मजो पे जान देने वालो,
गंदे पानी मे नाव खेने वालो,
हर खैर[1] पे चाहते हो सत्तर हूरें,
ऐ अपने खुदा से सूद लेने वालो।

◇ ◇ ◇

तुझ से जो फिरेगी तो किधर जायेगी,
ले जायेगा जिस सिम्त[2] उधर जायेगी,
दुनिया के हवादिस से[3] न घबरा कि ये उम्र,
जिस तरह गुजारेगा, गुजर जायेगी।

◇ ◇ ◇

गुलशन[4] की रविश[5] पे मुस्कराता हुआ चल,
बदमस्त घटा है, लडखडाता हुआ चल,
कल खाक मे मिल जायेगा ये ज़ोरे-शबाब[6],
'जोश' आज तो बाकपन दिखाता हुआ चल।

◇ ◇ ◇

कानून नही है कोई फितरत[7] के सिवा,
दुनिया नही कुछ नमूदे-ताकत[8] के सिवा,
कुव्वत[9] हासिल कर और मौला[10] बन जा,
माबूद[11] नही है कोई कुव्वत के सिवा।

---

१ नेकी २ ओर ३ दुर्घटनाओ (झगडो) से ४ बाग ५ पगडडी ६ यौवन का जोर ७ प्रकृति ८ शक्ति-प्रदर्शन ९ शक्ति १० भगवान ११ उपास्य (भगवान)

जीना है तो जीने की मुहब्बत में मरो,
गारे-हस्ती को[1] नेस्त[2] हो हो के भरो,
नौ-ए-इन्सा[3] का दर्द अगर है दिल में,
अपने से बुलन्दतर[4] की तख़लीक़[5] करो।

◇ ◇ ◇

मख़लूक़[6] की ख़िदमत से बहुत डरता है,
अपने ही लिए आठ पहर मरता है,
अफसोस तेरा अना-ए-जामिद[7] ऐ शख़्स,
अपने से तजावज[8] ही नहीं करता है।

◇ ◇ ◇

इस ज़ाहिरी सूरत पे ग़रीबों की न जाओ,
कर देंगे अमीरों का ये इक दिन मुथराओ,
दिल से जो टपकती हैं लहू की बूंदें,
हर बूंद में होता है समन्दर का दुबाओ।

◇ ◇ ◇

जिस चाल में बढ़ रही है फ़ौजे-बुरहान[9],
औहाम का[10] कतअ[11] हो रहा है वीरान,
जितना इन्सान बन रहा है अल्लाह,
अल्लाह उतना ही बन रहा है इन्सान।

१. जीवन के गड्ढे को २. नष्ट ३. मानव जाति ४. उच्चतर ५. रचना ६. मनुष्य ७. जड़ मान-गर्वनता ८. उल्लंघन (बाहर भी नहीं उठना) ९. तर्क की सेना (तर्क) १०. भ्रमों का ११ खेत

जीना है तो जीने की मुहब्बत मे मरो,
गारे-हस्ती को[1] नेस्त[2] हो हो के भरो,
नौ-ए-इन्सा[3] का दर्द अगर है दिल मे,
अपने से बुलन्दतर[4] की तख़लीक[5] करो।

० ० ०

मख़लूक[6] की ख़िदमत से बहुत डरता है,
अपने ही लिए आठ पहर मरता है,
अफसोस तेरा अना-ए-जामिद[7] ऐ शख़्स,
अपने से तजावज[8] ही नही करता है।

० ० ०

इस जाहिरी सूरत पे गरीबों की न जाओ,
कर देंगे अमीरो का ये इक दिन मुथराओ,
दिल से जो टपकती है लहू की बूंदें,
हर बूंद मे होता है समन्दर का दुबाओ।

० ० ०

जिस चाल से बढ रही है फौजे-बुरहान[9],
औहाम का[10] कतअ[11] हो रहा है वीरान,
जितना इन्सान बन रहा है अल्लाह,
अल्लाह उतना ही बन रहा है इन्सान।

---

१ जीवन के गारे को २ नष्ट ३ मानव जाति ४ उच्चतर ५. रचना ६ मनुष्य ७ जड़ [illegible] ८. उल्लंघन (आगे ही नहीं बढ़ता) ९ तर्क की सेना (तर्क) १०. भ्रमों का ११. क्षेत्र

हर गार[1] महो-साल से[2] पट जाता है,
साया हो कि धूप वक्त कट जाता है,
गम है मानिन्दे-बरफ[3], ऐसा इक बोझ,
हर गाम[4] पे जिसका वज़न घट जाता है।

◇ ◇ ◇

ऐ उम्रे-रवा[5] की रात, आहिस्ता गुज़र,
ऐ मजरे-कायनात[6], आहिस्ता गुज़र,
इक शै पे भी जमने नही पाती है निगाह,
ऐ काफिला-ए-हयात[7], आहिस्ता गुज़र।

◇ ◇ ◇

हर गम मै-गुलरग[8] से थर्राता है,
आलामे-जहा का[9] मुह उतर जाता है,
लेकिन जिसे कहते हैं गमे-इश्क ऐ 'जोश',
वो नशे मे कुछ और भी बढ जाता है।

◇ ◇ ◇

ये सिलसिला-ए-लाइन्तनाही[10] है कि जुल्फ[11],
गहवाराए-बादे-सुबहगाही[12] है कि जुल्फ,
ऐ जाने-शबाब[13] दोशे-सीमी पे[14] तेरी,
घुनकी हुई रात की सियाही है कि जुल्फ?

---

१ गढा २ महीनो-वर्षों (समय) से ३ बरफ जैसा ४ कदम ५ व्यतीत होती हुई आयु ६ ब्रह्माण्ड के दृश्य ७ जीवन के कारवान ८ गुलाब के रग की मदिरा ९ ससार के दुखो का १० कभी समाप्त न होने वाला सिलसिला ११ केश १२ प्रभात-समीर का हिंडोला १३. यौवन की जान (युवती) १४ रजत कधों पर

काकुल[1] खुल कर बिखर रही है गोया,
नरमी से नदी गुजर रही है गोया,
आँखे तेरी झुक रही है मुझ से मिलकर,
दीवार से धूप उतर रही है गोया।

◇ ◇ ◇

हम रहते है तिश्ना[2] छक के पीने के लिए,
गिरदाब[3] मे फसते है सफीने[4] के लिए,
जीते है तो मरने के लिए जीते है,
मरते है तो बेदरेग[5] जीने के लिए।

◇ ◇ ◇

दिन होते न जर्दरू[6], न राते ही सियाह,
भूले से भी इक लब[7] पे न आती कभी आह,
इन्सान के दिल को न छू सकते आलाम[8],
मेरा सा अगर रफीक[9] होता अल्लाह।

◇ ◇ ◇

तकदीर की ये दरोगबानी[10], अफसोस !
बर्ताव ये रहमत[11] के मनाफी[12], अफसोस !
फाके का शिकार है करोड़ो बन्दे,
अल्लाह की ये वादा-खिलाफी, अफसोस !

---

१ गेसू की लट २ प्यासे ३ भंवर ४. नाव ५ निसकोच ६ पीले मुँह वाले ७. होंठ ८ दुःख ९ स्नेही १० झूठ बोलना ११ अनुकम्पा १२ विरुद्ध

पछताई सबा[1] जुल्फ की खुशबू बन कर,
अरमान भागे फिजा[2] मे जुगनू बन कर,
देखा जो हिज्र[3] मे सू-ए अंजुम[4],
टपकी आखो से रात आसू बनकर।

◇ ◇ ◇

अलफाज़[5] है नागन सी जवानी के डसे,
अनफास[6] महकते हुए होटो मे बसे,
यू दिल को जगा रहा है तेरा लहजा[7],
जिस तरह सितार के कोई तार कसे।

◇ ◇ ◇

जाने वाले कमर[8] को रोके कोई,
शब[9] के पैके-सफर[10] को रोके कोई,
थक के मेरे ज़ानू पे वो सोया है अभी,
रोके रोके सहर[11] को रोके कोई।

◇ ◇ ◇

करनो[12] अभी टूटेंगे हज़ारो तारे,
मर से अभी गुज़रेंगे करोडो धारे,
इन्सान बनने मे है अभी वक्त बहुत,
अब तक तो फकत[13] दुम झडी है प्यारे।

---

१ प्रभात-समीर २ शून्य ३ जुदाई ४ सितारो की ओर ५ शब्द ६ श्वास ७ स्वर ८ चाद ९ रात १० रात्रि-दूत ११ सुबह १२ शताब्दियो तक १३ केवल